A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 08 फरवरी, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 158, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

फोटो- महेश मुद्गल

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

हाथ उठाया तो देखा

किसी और ने साथ में अपना हाथ नहीं
उठाया।
रोशनी के आखिरी किनारों तक
व्याप्त असहायता से उदास होकर
मैंने फिर
अपना हाथ नीचे कर लिया।

इस तरह
मेरी सक्रियता पराजित हुई
असक्रियता से।

इस तरह
तटस्थों ने वह जीत हासिल की
जिसके लिए वे लड़े ही नहीं।

-वीरू सोनकर

राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन में केन्द्र सरकार के साथ मिलकर करेंगे काम : सीएम

● मुख्यमंत्री डॉ. यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने राष्ट्रीय दलहन मिशन के पोर्टल का किया शुभारंभ ● केन्द्रीय कृषि मंत्रालय सहित देश के कई राज्यों के कृषि मंत्री हुए शामिल

दलहन उत्पादन बढ़ाकर आत्मनिर्भरता हासिल करना हमारा लक्ष्य : केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश की उपजाऊ धरती, समृद्ध जल संसाधन और अनुकूल जलवायु हमारी सबसे बड़ी ताकत हैं। इकार्डा जैसे अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान का सशक्त होना प्रदेश के लिए गर्व का विषय है। भारत में अन्न केवल उत्पादन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और संस्कार का आधार है अन्न देवो भवः हमारी कृषि परंपरा का मूल मंत्र है। मध्यप्रदेश 'कृषक कल्याण वर्ष' मना रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'बीज से बाजार तक' किसान के साथ खड़ी सरकार ने दलहन आत्मनिर्भरता मिशन की शुरुआत की है। इसका लक्ष्य वर्ष 2030-31 तक दलहन उत्पादन को 350 लाख टन तक पहुंचाना, आयात निर्भरता कम करना और किसानों की आय बढ़ाना है। इस मिशन किसानों को बेहतर बीज, आधुनिक भंडारण और सुनिश्चित विपणन की सुविधाएं मिलेंगी। उन्होंने कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा दाल उत्पादक एवं उपभोक्ता देश है। दलहन उत्पादन में मध्यप्रदेश देश में पहले स्थान पर है, जिससे इस मिशन का सर्वाधिक लाभ प्रदेश के किसानों को मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सीहोर जिले के अमलाहा स्थित खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र में दलहन आत्मनिर्भरता राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत आयोजित राष्ट्रीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने दीप प्रज्ज्वलित कर राष्ट्रीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय शुष्क क्षेत्र कृषि अनुसंधान केंद्र सीहोर के नवनिर्मित प्रशासनिक भवन, प्रशिक्षण केंद्र तथा अत्याधुनिक प्लांट टिशु कल्चर प्रयोगशाला का लोकार्पण भी किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इकार्डा का यह नवीन भवन प्रदेश के अन्नदाताओं के लिए नई आशाओं और संभावनाओं का द्वार खोलेगा। यह केंद्र वैज्ञानिक खेती, उन्नत तकनीक और वैश्विक कृषि अनुभव को किसानों से जोड़ने में ऐतिहासिक भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंचाई विस्तार और जल संरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि इकार्डा द्वारा विकसित वैज्ञानिक मॉडल प्रदेश की योजनाओं को मजबूत आधार प्रदान करेंगे। केन्द्रीय कृषि मंत्रालय और इकार्डा का यह संयुक्त प्रयास मध्यप्रदेश को टिकाऊ और समृद्ध कृषि का राष्ट्रीय ही नहीं, वैश्विक मॉडल बना सकता है। उन्होंने कहा कि सीहोर का यह राष्ट्रीय सम्मेलन दलहन क्षेत्र की वर्तमान चुनौतियों, मूल संवेदनाओं और भविष्य की संभावनाओं पर गहन विमर्श का सशक्त मंच बनेगा और नीति निर्धारण व अनुसंधान के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

दलहन उत्पादन में अग्रणी है मध्यप्रदेश : चौहान

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री चौहान ने कहा कि अमेरिका और यूरोप के 27 देशों से हमारा समझौता हुआ है। उन्होंने अमेरिका के साथ कृषि समझौते में किसानों के हितों की रक्षा की गई है। सीहोर का शरबती गेहूं दुनिया में धूम मचाएगा। देश के बासमती चावल और मसालों को 18 प्रतिशत टैरिफ से लाभ मिलेगा। टेक्सटाइल निर्यात बढ़ने से कपास उत्पादक किसानों को फायदा होगा। देश को दलहन में आत्मनिर्भर बनाना है। देश में मूंग को छोड़कर अन्य दालों का उत्पादन घट गया। दाल हमें विदेश से आयात करना पड़े यह देश के हित में नहीं है। उन्होंने राज्य सरकार को बधाई देते हुए कहा कि हमारा मध्यप्रदेश आज भी दलहन उत्पादन में अग्रणी है। उन्होंने कहा कि किसानों को केवल गेहूं, सोयाबीन और धान ही नहीं उगाना चाहिए, बल्कि फसल चक्रण पर ध्यान देना चाहिए। देश में चना, मसूर और उड़द का उत्पादन बढ़ाना है। इकार्डा के माध्यम से दलहन फसलों के उन्नत बीज तैयार किए जाएंगे। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा कि देश का कृषि मंत्रालय अब दिल्ली से नहीं, गांव और खेतों से चल रहा है। हमारे कृषि वैज्ञानिक प्लांट टिशू कल्चर के माध्यम से मसूर सहित अन्य दलहन फसलों की नई और उन्नत किस्में तैयार हो रही हैं। किसानों को ज्यादा उत्पादन वाले और रोग रहित बीच उपलब्ध कराना है। दलहन आत्म निर्भरता मिशन के अंगर्तग दालों के कलस्टर बनाए जाएंगे। इकार्डा के सहयोग से बीज ग्राम और बीज हब बनाए जाएंगे।

घर में से युवक को खींच ले गया बाघ, हुई मौत

पिपरिया में जबड़े में दबाकर जंगल में ले गया था; ग्रामीण बोले- कई दिनों से मूवमेंट

पिपरिया (नर्मदापुरम) (नप्र)। नर्मदापुरम जिले के पिपरिया में एक बाघ झोपड़ी में घुस गया। वहां से एक युवक को घसीटकर जंगल ले गया। शनिवार सुबह युवक का शव मिला।

सूचना मिलते ही वन विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। घटना झिरिया (डैम मोहल्ला) से सटे जंगल की है, जो बनखेड़ी सामान्य परिक्षेत्र की डोकरी खेड़ा बीट के तहत आता है। मृतक की पहचान बारी देवी गांव निवासी कमल ठाकुर (पिता शंन्नूलाल) के रूप में हुई है।

मृतक के भाई अतुवा ठाकुर ने बताया कि सुबह करीब 10 बजे एक दूध वाले ने सूचना दी कि कमल ठाकुर का शव क्षत-विक्षत हालत में पड़ा हुआ है। कमल पचमढ़ी मेस में खाना बनाने का काम करते थे। हर शनिवार अपने गांव आते थे। शनिवार रात को भी वह पचमढ़ी से लौटे थे। मृतक की उम्र करीब 40 साल थी। उनके 5 बच्चे हैं, जिनमें 3 बेटियां और 2 बेटे शामिल हैं। इनकी शादी 15 साल पहले हुई थी।

पीएम मोदी को रिसीव करने खुद पहुंचे पीएम इब्राहिम

● भारतीय पीएम को अपनी कार में बैठाया, मोदी बोले- ये उनका भारतीयों के लिए प्रेम

कुआलालंपुर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 साल बाद मलेशिया दौरे पर पहुंचे। मलेशिया के पीएम अनवर इब्राहिम उन्हें एयरपोर्ट पर अपनी कार से रिसीव किया। इसके बाद पीएम मोदी कुआलालंपुर में भारतीय समुदाय को संबोधित कर रहे हैं।

यहां उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम खुद एयरपोर्ट पर मेरा स्वागत करने आए। वे मुझे अपनी कार से यहां लाए। इतना ही नहीं, उन्होंने मुझे अपनी सीट पर भी बैठाया। मैंने कहा कि यह खास सम्मान भारत और भारतीय समुदाय के प्रति उनके प्यार और सम्मान को दिखाता है। मोदी ने कहा- मैंने कहा कि पिछले साल मैं आसियान शिखर सम्मेलन के लिए मलेशिया नहीं आ सका था, लेकिन मैंने अपने दोस्त से वादा किया था कि मैं जल्द मलेशिया आऊंगा। आज मैं अपना वादा निभाने आया हूं। साल 2026 में यह मेरी पहली विदेश यात्रा है।

● **मलेशिया के प्रधानमंत्री से द्विपक्षीय चर्चा करेंगे पीएम मोदी**- दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम के साथ द्विपक्षीय बातचीत करेंगे। इस दौरान दोनों देश यह देखेंगे कि भारत और मलेशिया के बीच बनी कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप में अब तक कितना डेवलपमेंट हुआ है और आगे क्या किया जा सकता है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, बातचीत में व्यापार और निवेश, रक्षा और सुरक्षा, सेमीकंडक्टर, डिजिटल तकनीक, नवीकरणीय ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और लोगों के आपसी संपर्क जैसे अहम मुद्दों पर चर्चा होगी। पी. कुमरन ने बताया कि दोनों देश रेलवे जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स, नवीकरणीय ऊर्जा और दूसरे सहयोग के क्षेत्रों पर भी काम करने की सोच रहे हैं। इसके साथ ही छात्रों के लिए स्कॉलरशिप की संख्या बढ़ाने और मलेशिया में थिरुवल्लुवर सेंटर फॉर इंडियन स्टडीज खोलने पर विचार हो रहा है। इस दौरे के दौरान प्रधानमंत्री मोदी मलेशिया में रहने वाले भारतीय समुदाय से भी मिलेंगे और उन्हें संबोधित करेंगे। मलेशिया में लगभग 29 लाख भारतीय मूल के लोग रहते हैं, जो दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है।

तेज रफ्तार ऑडी ने बाइक सवार परिवार को रौंदा

रीवा में महिला समेत तीन की मौत; बेटे की शादी का न्योता देने जा रहे थे पिता

रीवा (नप्र)। रीवा में तेज रफ्तार ऑडी कार ने बाइक सवार परिवार को पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए और तीनों सवार उछलकर दूर जा गिरे। हादसे में एक महिला समेत तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। यह दर्दनाक हादसा शनिवार दोपहर रीवा-रायपुर मार्ग पर कोष्टा गांव के पास हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, रायपुर की ओर से तेज रफ्तार में आ रही ऑडी कार ने बाइक को पीछे से टक्कर मारी। टक्कर के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई और सड़क पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

भगवान को पहला निमंत्रण कार्ड देने जा रहे थे

हादसे में जान गंवाने वालों की पहचान भागवत विश्वकर्मा, शिवम विश्वकर्मा और शीतल विश्वकर्मा के रूप में हुई है। तीनों एक ही परिवार के सदस्य बताए जा रहे हैं। पुलिस के अनुसार, भागवत विश्वकर्मा के बेटे शुभम की 25 फरवरी को शादी तय थी। हिंदू परंपरा के अनुसार शादी का पहला निमंत्रण भगवान को अर्पित किया जाता है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 08 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

उज्जैन में 139 दिवसीय विक्रमोत्सव का आरंभ 12 फरवरी से

भोपाल। सृष्टिकर्ता महादेव के भव्य-दिव्य महाशिवरात्रि उत्सव से विक्रमोत्सव 2026 का आरंभ कर सृष्टि निर्माण दिवस वर्ष प्रतिपदा से होते हुए पंच महाभूतों में अतिविशिष्ट जल तत्व के संरक्षण, संवर्धन के लिए विशिष्ट रूप से नियोजित जल गंगा संवर्धन अभियान का आयोजन होगा। 12 फरवरी से 30 जून, 2026 तक होने वाला यह 139 दिवसीय आयोजन भारत और देश तथा दुनिया में आयोजित होने वाला सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का एक अनूठा उत्सव होगा। जिसका प्रथम चरण महाशिवरात्रि पर सुप्रसिद्ध संगीतकार प्रीतम द्वारा शिवोऽहम महादेव की आराधना से प्रारंभ होगा। द्वितीय चरण 19 मार्च से 30 जून 2026 तक जलगंगा संवर्धन अभियान के तहत सम्पन्न होगा। जिसमें 41 से अधिक बहुआयामी गतिविधियों में 4 हजार से अधिक कलाकारों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जायेंगी। यह जानकारी संस्कृति विभाग के अपर मुख्य सचिव शिवशेखर शुक्ला ने मीडिया को दी। इस अवसर पर संस्कृति संचालनालय के संचालक एन. पी. नामदेव, माननीय मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार एवं महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी एवं दत्तोपंत ठेंगडी शोध संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश मिश्रा उपस्थित थे।

अपर मुख्य सचिव शिवशेखर शुक्ला ने बताया कि 139 दिवसीय इस महोत्सव में 41 से अधिक बहुआयामी गतिविधियाँ शिवरात्रि मेलों का समारंभ, महाकाल वन मेला, कृषि मेला, कलश यात्रा, विक्रम व्यापार मेला, संगीत, नृत्य, वादन, शिवोद्य, शिवपुराण, अनादि पर्व, विक्रम नाट्य समोराह, पुतुल समारोह, संगीत का उद्भव और विकास पर केंद्रित अनहद वैचारिक समागम, चित्र प्रदर्शनियाँ, संगोष्ठी, विक्रमादित्य का न्याय समागम, भारतीय इतिहास समागम, राष्ट्रीय विज्ञान समागम, वेद अंताक्षरी, कोटि सूर्योपासना, शिल्प कला कार्यशाला, प्रकाशन लोकार्पण, पौराणिक फिल्मों का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, बोलियों एवं हिन्दी रचनाओं का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर मातृशक्ति कवयित्री सम्मेलन, ड्रोन शो व ख्यात कलाकारों प्रीतम तथा विशाल मिश्रा की प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। इश साथ ही भारतीय कालगणना पर केन्द्रित विक्रम पंचांग सहित विविध पुस्तकों का लोकार्पण एवं सबसे महत्वपूर्ण देश का सबसे बड़ा सम्मान सम्राट विक्रमादित्य अंतर्राष्ट्रीय अलंकरण विशेष आकर्षण का केंद्र होगा। उज्जैन के दशहरा मैदान में महाकाल वनमेला

विक्रमोत्सव अंतर्गत 12 से 16 फरवरी के बीच उज्जैन के दशहरा मैदान में महाकाल वन मेला

आयोजित किया जा रहा है। जिसमें हर्बल उत्पादों एवं पारंपरिक हर्बल ज्ञान के विषय में प्रदर्शनी, उत्पादकों का प्रदर्शन किया जायेगा।

देव महादेव पर्व :

महाशिवरात्रि के अवसर पर प्रदेश के 60 से अधिक प्रमुख शिव मंदिरों में मेलो का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें मंदिरों की साजसज्जा, साफ-सफाई एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रमुख है।

पौराणिक जनजातीय विषयों पर केन्द्रित प्रदर्शनियाँ

विक्रमोत्सव अंतर्गत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ परिसर एवं कालिदास संस्कृत अकादमी परिसर में पौराणिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, जनजातीय विषयों पर 7 विभिन्न प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या, आर्ष भारत, महाभारतकालीन अस्त्र-शस्त्र, चक्रव्यूह, पताकाएँ, शंख, 84 महादेव, जनजातीय देवलोक, श्रीकृष्ण प्रभात एवं रागमाला प्रमुख है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की प्रस्तुतियां

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर चुकी नाट्य प्रस्तुतियों पर केन्द्रित दस दिवसीय इस विक्रम नाट्य समारोह में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा तैयार की गया प्रस्तुतियों जटायुवधम्, चारूदत्तम, भरतवाक्य, जाति जीवनम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम् और चतुर्भाणी शामिल है। इसके साथ ही अंधायुग, भूमि सूर्य वीरगाथा, आदि-अनंत, अभंग नाद, सौगंधिकाहरणं का भी मंचन होगा।

25 से 28 फरवरी तक पुतुल समारोह

भारत की विभिन्न पुतुल (कठपुतली) शैलियों पर आधारित पुतुल समारोह में 6 विभिन्न शैलियों में कठपुतलियों के माध्यम से सम्राट विक्रमादित्य, भीम और बकासुर, आठवां, द आर्चर स्टूड अलोन, दुर्योधन वधम् व पद्मगाथा की प्रस्तुतियाँ होगी।

कवि सम्मेलनों का आयोजन

1 मार्च को लोकरंजन के अंतर्गत जनजातीय भाषा एवं बोलियों का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। जिसमें देश भर के विभिन्न बोलियों एवं भाषा के लगभग 9 कवि अपनी रचनाओं का पाठ करेंगे। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर नारी शक्ति अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन आयोजित किया जायेगाद्य साथ ही 14 मार्च को देशभर के 10 सुप्रसिद्ध एवं जाने-माने कवियों का कविता पाठ होगा। जिसका संचालन अंतरराष्ट्रीय कवि दिनेश दिग्गज करेंगे।

शिव पुराण

13 से 17 मार्च तक शिवपुराण के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के अठारह पुराणों में से एक शिव पुराण आख्यान पर आधरित चित्र प्रदर्शनी, लोक नृत्य तथा नृत्य नाटिकाओं का आयोजन होगा।

अंतरराष्ट्रीय पौराणिक फिल्म महोत्सव

पौराणिक फिल्मों का अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव 13 से 17 मार्च 2026 तक उज्जैन में होगा। जिसमें 25 से ज्यादा देश शामिल हो रहे हैं। समारोह में अंग्रेजी, फ्रेंच, हिबरू, रसियन, स्पेनिश, अइसलेन्दीक, इटेलियन, डच, मंगोलियन, फिजियन, इन्डोनेशियन, अफ्रीकन, नाइजिरियन, सिंहली, ग्रीक, भाषाओं की 25 से अधिक फिल्मों का प्रदर्शन होगा। इस फिल्म समारोह में महाभारत पर केन्द्रित फिल्मों का भी प्रदर्शन होगाद्य

सम्राट विक्रमादित्य अलंकरण

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ ने ऐसे युग निर्माता गणनायक की स्मृति को सुरक्षित रखने तथा उनके शौर्य, औदार्य, न्यायप्रियता तथा धर्म एवं प्रजावत्सल गुणों को समाज में पुन:स्थापित करने की दृष्टि से राशि रूपये 1 करोड़ 1 लाख का अंतरराष्ट्रीय सम्मान स्थापित किया है। यह देश का सबसे बड़ा सम्मान होने जा रहा है। इसके अलावा सम्राट विक्रमादित्य के नाम से 21 लाख रूपये का एक राष्ट्रीय सम्मान एवं 5-5 लाख रुपये राशि के तीन राज्य स्तरीय सम्मान स्थापित किये हैं।

भारतीय सेना के लिए खरीदे जाएंगे 30 नए राडार

- 50 किमी रेंज,3 डी निगरानी और बीम कवरेज से होंगे लैस

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने भारतीय सेना की वायु रक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए 30 लो-लेवल लाइट-वेट राडार (एलएलएलआर) की खरीद प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस संबंध में शुक्रवार को निविदा प्रस्ताव (आरएफपी) जारी किए गए। सूत्रों के

अनुसार, यह खरीद फास्ट ट्रैक प्रोक्योरमेंट प्रोसेस के तहत स्वदेशी कंपनियों से की जाएगी, जिसके लिए लगभग 725 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। तकनीकी मानकों के अनुसार, उन्नत लो-लेवल लाइट-वेट राडार मित्र और शत्रु दोनों प्रकार के हवाई लक्ष्यों की निरंतर 3-डी निगरानी प्रदान करेगा।

- एलएलएलआर-आई से और मजबूत होगा एयर डिफेंस सिस्टम

भारतीय सेना के लिए 30 नए राडार खरीदे जाएंगे- आरएफपी में यह भी उल्लेख है कि राडार कम से कम 50 किलोमीटर की दूरी तक विभिन्न प्रकार के हवाई लक्ष्यों का पता लगाने में सक्षम होना चाहिए और ऊंचाई के लिहाज से व्यापक बीम कवरेज उपलब्ध कराएगा। सेना की वेबसाइट पर उपलब्ध आरएफपी दस्तावेज के मुताबिक रक्षा मंत्रालय 30 एलएलएलआर (आई) और दो एलएलएलआर (आइ) के सीआरवी (क्लासरूम वेरिएंट) खरीदने का इच्छुक है। एलएलएलआर (आई) का अर्थ लो-लेवल लाइट-वेट राडार (इंप्रूव्ड) है, जबकि सीआरवी प्रशिक्षण उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाया जाने वाला संस्करण है। दस्तावेज में इन राडारों को हवाई क्षेत्र की स्कैनिंग के लिए उन्नत निगरानी प्रणाली के रूप में परिकल्पित किया गया है।

रेलिंग तोड़कर कार नहर में गिरी, 3 की मौत

इटारसी में गाड़ी में फंसे युवक विंडो ग्लास पीटते रहे; देखते ही देखते डूब गए

इटारसी (नप्र)। इटारसी-पथरोटा मार्ग शुक्रवार देर रात तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पथरोटा की बड़ी नहर की रेलिंग तोड़ती हुई गहरे पानी में जा गिरी। कार में सवार तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान हो गई है। रैसलपुर निवासी लकी पटेल (30) पिता भवानी शंकर पटेल कार चला रहा था। दो अन्य मृतकों में कार सवार शिवम तिवारी (26) पिता महेश तिवारी, निवासी खीर पानी और अभय उर्फ अभि चौहान (19) पिता राकेश चौहान निवासी जय प्रकाश नगर, पुरानी इटारसी हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इटारसी की ओर से आ रही

ग्रे रंग की कार अचानक पुल की रेलिंग को तोड़ते हुए सीधे नहर में समा गई। एडीआरएफ की प्लाटून कमांडर अमृता दीक्षित ने बताया कि कार सवार युवक बचने के लिए शीशे खोलने की कोशिश कर रहे थे। अंदर से बचाव के लिए चिल्ला भी रहे थे, लेकिन कार लॉक हो गई। तीनों गहरे पानी में जाते गए। लोगों ने कार को पानी में डूबते देखा और तत्काल पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही इटारसी और पथरोटा पुलिस मौके पर पहुंची। हादसे के तुरंत बाद एक स्थानीय युवक ने जान की परवाह किए बिना नहर में कूदकर कार सवार लोगों को बचाने की कोशिश की, लेकिन गहराई और तेज बहाव के कारण वह सफल नहीं हो सका।

कार के अंदर तीनों युवक मृत हालत में मिले- हालात को देखते हुए नर्मदापुरम से एसडीआरएफ की टीम को बुलाया गया। करीब ढाई घंटे तक चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद कार को नहर से बाहर निकाला जा सका।

राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बनाई नई ड्रोन आर्मी

- पूरी ब्रिटिश सेना से बड़ी यूनिट, यूरोप में बदल सकते हैं सुरक्षा समीकरण

लंदन (एजेंसी)। रूस ने यूक्रेन और यूरोप से तनातनी के बीच हवाई क्षमता बढ़ाने की दिशा में बड़ी कामयाबी हासिल की है। रूस ने एक नई ड्रोन फोर्स बनाई है, जिसके बारे में दावा किया जा रहा है कि यह पूरी ब्रिटिश आर्मी से बड़ी है। व्लादिमीर पुतिन की इस बिना नाम वाली सिस्टम फोर्स में 87,000 सैनिक हैं। वहीं ब्रिटेन की मिलिट्री में इससे 17 हजार कम यानी 70,000 सैनिक हैं। यूके और यूरोप के रक्षा एक्सपर्ट ने इसे चिंता का सबब करार दिया है क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में ड्रोन से हमले की महारत रखने वाले सैनिक पूरे यूरोप को मुश्किल में डाल सकते है। द सन ने अमेरिका-बेस इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ वॉर के हवाले से बताया है कि रूस की अनमैन्ड सिस्टम्स

फोर्सेज कथित तौर पर रेजिमेंट, 25 बटालियन, एक डिवीजन और तीन टुकड़ियां बनाई हैं। मॉस्को की इस रूबिकॉन ड्रोन फोर्स में बर्स-सरमत अनमैन्ड सिस्टम स्पेशल सेंटर में बड़ी संख्या में सैनिक हैं। ड्रोन की आधुनिक युद्ध में अहमियत को देखते हुए ये बड़ी कामयाबी है। रूस की नई आर्मी में 87 हजार से ज्यादा सैनिक होने की बात कही गई है। वहीं ब्रिटिश आर्मी में सैनिकों की संख्या हालिया महीनों में घटी है। यह संख्या अब घटकर 70,300 सैनिकों रह गई है। ब्रिटिश आर्मी में बीते करीब 200 वर्षों में सैनिकों की इतनी कम संख्या नहीं रही है। यह 1803 के बाद से सैनिकों का सबसे छोटा आकार है।

रूसी ड्रोन आर्मी पड़ेगी भारी

एलीट एयरबोर्न सैनिक पहली ब्रिटिश यूनिट थे, जिसने एक डेडिकेटेड ड्रोन प्लाटून बनाया। अब तक सिर्फ 3,000 सैनिकों को ड्रोन उड़ाने की ट्रेनिंग दी गई है। सशस्त्र बलों के मंत्री और पूर्व कमांडो अल कार्न्स ने बेहतर ड्रोन ट्रेनिंग पर जोर दिया है। इसमें नए हथियार बनाने पर फोकस करने वाले कोर्स शामिल हैं। अल कार्न्स का कहना है कि यूक्रेन में रूस के ड्रोन तोपखाने से ज्यादा नुकसान पहुंचा रहे हैं। यह आधुनिक युद्ध की सच्चाई है, जिसे पूरे यूरोप को समझना होगा। यूके के रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि हम अपनी ड्रोन क्षमताओं को बढ़ा रहे हैं।

मिट्टी में नहीं

अब हवा में हो रहा आलू का उत्पादन

- इसे खाने से बीमारियां भी नहीं, ग्वालियर में हुआ प्रयोग

ग्वालियर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में खेती के क्षेत्र में एक बेहद दिलचस्प और आधुनिक प्रयोग किया जा रहा है। यहां अब आलू जमीन में नहीं, बल्कि हवा में उगाए जा रहे हैं। यह अनोखा काम शहर में स्थित राजमाता विजया राजे सिंधिया विश्वविद्यालय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग की एरोपोनिक्स लैब यूनिट में हो रहा है। इस लैब में करीब 20 अलग-अलग किस्मों के आलू के बीज तैयार किए जा रहे हैं, जो पूरी तरह से हेल्दी, शुद्ध और बीमारी-मुक्त बताए जा रहे हैं। जैव प्रौद्योगिकी विभाग की वैज्ञानिक

डॉक्टर सुषमा तिवारी ने बताया कि इस तकनीक में सबसे पहले टिशू कल्चर के जरिए लैब में आलू के पौधे तैयार किए जाते हैं। जब ये पौधे थोड़े मजबूत हो जाते हैं, जिसे हार्डनिंग कहा जाता है, तब इन्हें एरोपोनिक्स यूनिट में ट्रांसप्लांट किया जाता है। यहां खास बात यह है कि पौधे मिट्टी में नहीं लगाए जाते।

- 20 तरह का आलू उगाया जा रहा- इस एरोपोनिक्स लैब में करीब 20 तरह की आलू की वैरायटी उगाई जा रही हैं। इनमें एक खास लाल रंग की वैरायटी भी शामिल है, जिसे काफी लाभदायक माना जा रहा है। इसके अलावा, चिप्स और फ्रेंच फ्राइज के लिए इस्तेमाल होने वाली वैरायटी पर भी काम किया जा रहा है, क्योंकि प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में इनकी काफी मांग रहती है। कुछ हल्के गुलाबी रंग की नई वैरायटी भी लगाई गई हैं, जो खाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं और जिनकी बाजार में अच्छी डिमांड है।

फॉगिंग के जरिए मिलती है न्यूट्रीशन

डॉ सुषमा तिवारी ने बताया कि इस यूनिट में हर तीन मिनट में करीब 30 सेकेंड के लिए फॉगिंग की जाती है। इसी फॉग के जरिए पौधों को वे सारे न्यूट्रिशन मिलते हैं, जो सामान्य तौर पर मिट्टी से मिलते हैं। यूनिट के अंदर तापमान को पूरी तरह कंट्रोल किया जाता है, ताकि पौधों की ग्रोथ सही तरीके से हो सके। कुछ ही दिनों में जड़ों का अच्छा विकास हो जाता है और करीब 45 से 55 दिनों के अंदर हवा में ही आलू बनने लगते हैं।

जब आलू तैयार हो जाते हैं, तो पूरा यूनिट ऊपर उठाया जाता है और आलू साफ-साफ दिखाई देने लगते हैं। इसी वजह से इसे हवा में आलू उत्पादन कहा जाता है।

मीडिया को दबाने में सरकारें कर रहीं ताकतों का इस्तेमाल

लंदन (एजेंसी)। नवंबर 2024 में सर्बिया के एक रेलवे स्टेशन की कैनोपी गिरने से 16 लोगों की मौत हो गई। इस घटना पर स्वतंत्र पत्रकारों ने

- अमेरिका ने भी स्वतंत्र विदेशी मीडिया की सब्सिडी रोकी

रिपोर्टिंग की, लेकिन कुछ पत्रकारों को गुंडों ने पीटा, पुलिस खड़ी होकर देखती रही। सर्बिया के स्वतंत्र पत्रकार संघ के अनुसार 2025 में वहां पत्रकारों पर 91 शारीरिक हमले हुए। हमलावरों को सजा भी नहीं मिलती है। सर्बिया ही नहीं, दुनियाभर में मीडिया

की आजादी घट रही है। रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स की रिपोर्ट में प्रेस की स्वतंत्रता का वैश्विक औसत स्कोर 2025 में 55 से नीचे आ गया। 2014 में ये 100 में 67 पर था। दुनिया के आधे से ज्यादा देशों में पत्रकारिता करने की स्थितियां कठिन या बहुत गंभीर हैं। प्रेस फ्रीडम की इस गिरावट को गंभीरता से देखा जाना चाहिए, क्योंकि आलोचनात्मक पत्रकारिता (क्रिटिकल जर्नलिज्म) सत्ताधीशों की मनमानी पर नियंत्रण है। अगर ताकतवर लोगों को पता हो कि उनके गलत काम न तो उजागर होंगे और न ही प्रचारित, तो वे और ज्यादा करेंगे। अमेरिकी

- पचास फीसदी से ज्यादा देशों में प्रेस की आजादी खतरे में

सरकार पहले दुनियाभर में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए खड़ी होती थी। वह अब ऐसा नहीं करती। ट्रम्प प्रशासन ने स्वतंत्र विदेशी मीडिया को दी जाने वाली सब्सिडी खत्म कर दी है। रेडियो फ्री एशिया जैसे सार्वजनिक आउटलेट्स बंद कर दिए हैं। ट्रम्प ने साफ कर दिया है कि वे सरकारों पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर दबाव नहीं डालेंगे, जब तक वे वोक यूरोपियन हों। अजरबैजान से एल साल्वाडोर तक मजबूत शासकों ने परेशान करने वाले पत्रकारों को जेल में डालने, डराने का मौका पकड़ लिया।

बड़ी गिरावट लोकतांत्रिक देशों में आ रही

मीडिया की आजादी में बड़ी गिरावट लोकतांत्रिक देशों में आ रही है क्योंकि तानाशाही देशों में तो स्वतंत्र पत्रकारिता लगभग खत्म हो गई है। लोकतांत्रिक सरकारें आलोचना को पूरी तरह खत्म करने की कोशिश नहीं करतीं, बल्कि वे खबर जुटाने वालों के लिए प्रोत्साहनों को इस तरह बिगाड़ देती हैं कि आम लोगों को सत्तारूढ़ पार्टी की भरपूर तारीफ सुनाई दे और असहमति की। आवाज सिर्फ कभी-कभार की चीख जैसी रह जाए। मकसद है ताकतवरों को सत्ता में बनाए रखना और उनके दुरुपयोग की निगरानी कम करना। जो लोग ताकतवरों को परेशान करते हैं, उनकी निजी जानकारी सार्वजनिक की जाती है, खासकर अगर वे महिलाएं हों। संयुक्त राष्ट्र के सर्वे में पाया गया कि 75 फीसदी महिला रिपोर्टरों ने ऑनलाइन दुर्व्यवहार झेला और 42 फीसदी को व्यक्तिगत रूप से परेशान किया गया। या धमकी दी गई। सितंबर में तुर्किये सरकार ने कैन होल्डिंग नामकमीडिया समूह पर नियंत्रण कर लिया। तंजानिया में धांधली वाले चुनाव को कवर करने पर पत्रकारों को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया। वहीं इंडोनेशिया में पत्रकारिता की गुणवत्ता पिछले पांच या छह वर्षों में आर्थिक दबाव के कारण गिर गई है।

मंत्री-शाह ने कर्नल सोफिया मामले में चौथी बार माफी मांगी

● सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से पहले वीडियो जारी किया, कहा- आवेश में निकले थे शब्द

भोपाल (नप्र)। कर्नल सोफिया को लेकर दिए बयान को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई से दो दिन पहले प्रदेश के जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह ने एक बार फिर माफी मांगी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी किया है।

शाह ने कहा- मैंने पहले भी कई बार कहा है, मेरा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं था कि किसी महिला अधिकारी, भारतीय सेना या समाज, किसी वर्ग का अपमान हो। वे शब्द निस्संदेह मेरी भावना के अनुरूप नहीं थे। वे शब्द देश भक्ति के उत्साह, उत्तेजना और आवेश में निकले थे। गलती के पीछे की भावना को अवश्य देखा जाना चाहिए। आप सब जानते हैं कि मेरी कोई दुर्भावना नहीं थी। मैंने अंत:करण से क्षमा याचना की। कई बार की है। आज फिर कर रहा हूं। मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक है कि मेरी छोटी से त्रुटि

से ऐसा विवाद उत्पन्न हुआ। मुझे विश्वास है कि मेरी भावनाओं को सही संदर्भ में देखा जाएगा। भारतीय सेना के प्रति मेरे मन में सदैव सम्मान रहा है और रहेगा। सार्वजनिक जीवन में रहते हुए ऐसे शब्दों की मर्यादा, संवेदनशीलता अत्यंत आवश्यक है। इस घटना से मैंने आत्ममंथन किया है। सबक लिया है। जिम्मेदारी मानता हूं। भविष्य में वाणी पर नियंत्रण रहेगा। ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी। एक बार पुन: उस मामले में आप सभी नागरिकों से, भारतीय सेना से, सब लोगों से अंत:करण से माफी मांगता हूं।

विजय शाह ने पिछले साल महू में दिया था बयान- 11 मई को इंदौर के महू के रायकुंडा गांव में आयोजित कार्यक्रम में मंत्री विजय शाह संबोधित कर रहे थे। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर कहा था- उन्होंने (आतंकियों ने) कपड़े उतार-उतार कर हमारे हिंदुओं को मारा और मोदी जी ने उनकी बहन को उनकी ऐसी की तैसी करने उनके घर भेजा।

शाह ने आगे कहा- 'अब मोदी जी कपड़े तो उतार नहीं सकते। इसलिए उनकी समाज की बहन को भेजा कि तुमने हमारी बहनों को विधवा किया है तो तुम्हारे समाज की बहन आकर तुम्हें नंगा करके छोड़ेगी। देश का मान-सम्मान और हमारी बहनों के सुहाग का बदला तुम्हारी जाति, समाज की बहनों को पाकिस्तान भेजकर ले सकते हैं।'

गायत्री नगर में गंदे पानी की सप्लाई

● रहवासियों ने अफसरों को दिखाया वीडियो, शुरुआती 10 मिनट आ रहा काला पानी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वार्ड-65 स्थित गायत्री नगर कॉलोनी में गंदे पानी की सप्लाई हो रही है। कई बार शिकायतें करने के बाद भी जब पानी की क्वॉलिटी ठीक नहीं हुई तो कॉलोनी के लोगों ने वीडियो बनाया और अफसरों को दिखाया। इधर, पानी की गुणवत्ता को लेकर ही मेयर मालती राय ने संबंधित अधिकारियों की बैठक भी ली।

इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से 33 लोगों की मौत हो गई। इसके बाद भोपाल में जल सुनवाई, टेस्टिंग और लाइन सुधारने का काम शुरू हुआ। बावजूद न तो पानी की क्वॉलिटी सुधरी और न ही सीवेज में से पानी की लाइन हट पाई हैं। शुरुआती 10 मिनट तक नलों से गंदा पानी आ रहा है। जोन-16 के वार्ड-65 में भी गंदे पानी की समस्या है। इस कारण लोग

परेशान हैं। कॉलोनी में पानी के चैंबर में नाली का पानी लीकेज होने से पेयजल दूषित हो रहा है। बार-बार शिकायत के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। गायत्री नगर के जयदीप ठाकुर ने बताया कि कई दिन से घरों में गंदा पानी आ रहा है। जिससे लोगों को मजबूरी में दूषित जल का उपयोग करना पड़ रहा है। इससे स्वास्थ्य संबंधी बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है।

क्षेत्र में सफाई व्यवस्था भी ठीक नहीं- रहवासी ठाकुर ने बताया कि क्षेत्र में साफ-सफाई व्यवस्था भी पूरी तरह से बिगड़ी हुई है। नालियों की नियमित सफाई नहीं होने से गंदगी फैल रही है। बदबू और मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ रहा है। कॉलोनी के लोगों ने निगम से जल्द पानी की पाइप लाइन और चैंबर की मरम्मत करने की मांग की है।

मेयर-एमआईसी मेंबर ने बैठक ली- शनिवार को श्यामला हिल्स स्थित जलकार्य ऑफिस कांफ्रेंस हॉल में महापौर मालती राय और एमआईसी मेंबर रविंद्र यति ने जल कार्य, सीवेज एवं फायर विभाग की समीक्षा बैठक ली। बैठक में पानी की गुणवत्ता जांच, जल कर वसूली, सीवेज सिस्टम एवं फायर सिस्टम को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। अधीक्षण यंत्री उदित गर्ग भी मौजूद रहे।

बैंक कर्मी ने फांसी लगा कर सुसाइड किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीला जमालपुरा इलाके में रहने वाले बैंककर्मी ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। शनिवार सुबह बॉडी पेड़ पर फांसी के फंदे पर लटकी मिली है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

हिमांशु रायकवार पिता सुनील कुमार रायकवार (28) रेजीमेंट रोड टीला जमालपुरा थाना क्षेत्र का रहने वाला था। शनिवार सुबह परिजनों ने घर के पिछले हिस्से में मूंगे के पेड़ पर फांसी के फंदे पर लटका देखा। जिसके बाद पुलिस को सूचना दी।

पुलिस ने मौके पर पहुंचकर पंचनामा कार्रवाई की। बॉडी को पीएम के लिए रवाना किया। मृतक के कपड़ों की तलाशी में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस ने उसके मोबाइल फोन को कब्जे में ले लिया है। जिसकी जांच कराई जा रही है।

फ्लाईओवर चौड़ीकरण के लिए

आनंद नगर से मंदिर, वार्ड ऑफिस-पुलिस चौकी हटेगी, पूजा-अर्चना के बाद दूसरे मंदिर में स्थापित होंगी मूर्तियां,

भोपाल (नप्र)। भोपाल के आनंद नगर तिराहे के पास से 3 मंदिर, वार्ड ऑफिस, पुलिस चौकी और सार्वजनिक शौचालय हटाने की कार्रवाई अगले हफ्ते होगी। अफसरों की माने तो 3 में से 2 मंदिर पूरे और एक आधा हटाया जाएगा। यहां विराजित भगवान की मूर्तियों को विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने के बाद दूसरे मंदिर में स्थापित किया जाएगा। तीनों मंदिर में भगवान शिव, हनुमान और मां दुर्गा की मूर्तियां स्थापित हैं। इस संबंध में मंदिर के पुजारियों से भी बात की गई है। तिराहे पर पुलिस चौकी को सामने खाली जगह पर शिफ्ट किया जा रहा है। वहीं, वार्ड ऑफिस की पास के वार्ड कार्यालय में शिफ्टिंग की जा रही है। निगम के सामुदायिक शौचालय को भी अगले तीन से चार दिन के अंदर हटाने की कार्रवाई होगी। शुक्रवार को आनंद तिराहे से दुकानें हटाने की कार्रवाई की गई थी।

146 दुकानें भी हटाई गई

आनंद नगर तिराहे पर शुक्रवार को कुल 146 दुकानों को हटाने की कार्रवाई हो चुकी है। सुबह से शाम तक दुकानें तोड़ दी गईं। कई दुकानदारों ने स्वैच्छा से ही दुकानें हटा ली थी। कुछ दिन पहले प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी यहां पहुंचे थे और दुकानें हटाने पर आंदोलन की चेतावनी दी थी। हालांकि, प्रशासन पहले ही मुआवजा वितरित कर चुका था। इसलिए लोगों ने स्वैच्छा से अपनी दुकानें हटाने का काम शुरू कर दिया था।

इसलिए हटाए जा रहे निर्माण- नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफिस इंडिया (एनएचएआई) नेशनल हाईवे-146 के आशाराम तिराहा से रत्नागिरी तिराहे तक 16 किलोमीटर लंबी सड़क को चौड़ा कर रहा है। सिक्सलेन निर्माण के दौरान ही आनंद नगर में फ्लाईओवर भी बनेगा। इसके लिए सड़क किनारे की दुकानें हटाई गई है। ताकि, निर्माण में कोई दिक्कत न हो।

करप्शन पर मंत्री वर्मा बोले-

थोड़ा-बहुत हर जगह चलता है

कहा- बेईमान आदमी आदत नहीं छोड़ता, कई तहसीलदारों को मैंने सस्पेंड किया, रिश्वतखोर को बताया राष्ट्रद्रोही

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा ने राजगढ़ में करप्शन को लेकर कहा कि थोड़ा बहुत तो हर जगह चलता है, लेकिन जो रिश्वत लेता है, वह राष्ट्रद्रोही है। चाहे मैं हूं या कोई भी हो। मैं 8 चुनाव जीता हूं। जनता ने विश्वास किया। गांव का किसान हूं, लेकिन रिश्वत लेने का मन नहीं करता है।

इससे पहले मंत्री करण सिंह ने लाड़ली बहना योजना की लाभार्थियों को धमकाया था। उन्होंने कहा था कि एक दिन सभी लाड़ली बहनों को बुलाएंगे। अगर वे कार्यक्रम में शामिल नहीं हुईं, तो योजना से नाम काट दिए जाएंगे। हालांकि बाद में अपने बयान से पलट गए थे।

सफाई में मंत्री बोले- योजना को कोई समाप्त नहीं कर सकता

इस दौरान उन्होंने यह सवाल भी उठाया कि कांग्रेस शासनकाल में महिलाओं को इस तरह की कोई आर्थिक सहायता मिलती थी या नहीं। हालांकि इसके बाद अगले दिन वे बयान से पलट गए थे। सफाई में कहा था कि यह योजना बहनों के सम्मान से जुड़ी है। इसे कोई भी समाप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा था कि मैंने पहले भी और बाद में भी बहनों के सम्मान में उन्हें प्रणाम करते हुए अपनी बात रखी थी। अगर मेरे किसी बयान से ठेस पहुंची हो तो मैं खेद प्रकट करता हूं।

● **बेईमान आदमी अपनी आदत नहीं छोड़ता-** राजगढ़ में मीडिया से मंत्री वर्मा ने कहा कि बेईमान व्यक्ति किसी भी पद पर हो, उसकी प्रवृत्ति नहीं बदलती। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि बेईमान आदमी को चाहे मंत्री, तहसीलदार, इंजीनियर बना दो या मजदूरी करने को कह दो, वह अपनी आदत नहीं छोड़ता। मजदूर जब जर्दा खाता है तो 5 बार थूकता है। मंत्री वर्मा यहीं नहीं रुके। उन्होंने कहा कि बेईमान आदमी कहीं भी छोटे मोटे तो..ऐसा नहीं है कि मैं दावा कर रहा हूं। कई तहसीलदार हैं, जिन्हें मैंने सस्पेंड किया है। आपके यहां (राजगढ़) आया तो सस्पेंड किया। आष्टा में गया और सीमांकन पर सस्पेंड किया है। सिवनी गया, वहां भी सस्पेंड किया है।

कलेक्टर पहले बोल देते हैं ठीक कर देंगे

मंत्री वर्मा ने कहा कि कलेक्टर पहले बोल देते हैं कि साहब, थोड़ा बहुत गलती सलती हो तो ठीक कर देंगे। मैं कहता हूं कि मुझे देखो, मैं भी काम कर रहा हूं। आप भी काम कर रहे हैं। ईमानदारी से राष्ट्रभक्ति से काम करें।

रोटी बांधकर लाया हूं

हम इंदौर जाते हैं, सर्किट हाउस में चाय आती है, नाश्ता आता है, लेकिन मेरे यहां सब बंद है। अपने खाने के लिए सब बांध के लाया हूं। टिफिन में रोटी बांधकर लाया हूं। जरूरत होगी तो मांग लूंगा। सरपंच के यहां मांग लूंगा।

यात्री बस ने एएसआई को कुचला, मौत

● पांच महीने बाद रिटायमेंट होने वाला था, बाइक से सीहोर जाते वक्त हादसा

भोपाल (नप्र)। भोपाल-इंदौर हाइवे पर शुक्रवार दोपहर एक बाइक सवार एएसआई को यात्री बस ने टक्कर मार दी। इलाज के दौरान शनिवार सुबह उनकी मौत हो गई। हादसा खजूरी थाना क्षेत्र के तूमड़ा जोड़ पर हुआ। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। आरोपी चालक हादसे के बाद बस को मौके पर छोड़कर भाग निकला था। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

शंकर सिंह ठाकुर (61) अशोका गार्डन में रहते थे और सीहोर पुलिस लाइन में बतौर एएसआई पदस्थ थे। बाइक पर सवार होकर सीहोर में जा रहे थे। वहीं लाइन में तैनात थे। तूमड़ा जोड़ के पास थाना खजूरी इलाके में एक बस ने टक्कर मार दी। इससे उनको गंभीर चोट आई थी। इलाज के दौरान शनिवार की सुबह उनकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने टक्कर मारने वाली बस को कब्जे में ले लिया है। आरोपी चालक की तलाश की जा रही है।

जुलाई में होना था रिटायरमेंट

शंकर सिंह का चार महीने बाद रिटायरमेंट था। परिजनों से अकसर रिटायरमेंट के बाद कारोबार करने की बात करते थे। उनका एक बेटा और एक बेटी है। दोनों का विवाह हो चुका है। मृतक के बेटे रामकुमार ठाकुर के मुताबिक हादसा शुक्रवार दोपहर को हुआ था। तूमड़ा इंदौर रोड पर उन्हें यात्रियों से भरी बस ने टक्कर मार दी। उन्हें इलाज के लिए भैंसाखेड़ी के प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था। जहां शनिवार की सुबह उन्होंने दम तोड़ दिया। पीएम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

9 फरवरी को बंधक श्रम उन्मूलन दिवस के अवसर पर नयी श्रमिक संहिताओं पर कार्यशाला

भोपाल (नप्र)। श्रम विभाग ने 9 फरवरी को 'बंधक श्रम उन्मूलन दिवस' पर कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेन्शन सेंटर (मिंटो हॉल) में कार्यशाला का आयोजन किया है। उद्घाटन सुबह 10 बजे श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल करेंगे। कार्यशाला में राज्य स्तरीय एक्शन प्लान का विमोचन भी होगा।

पूरे मध्य प्रदेश में महीनेभर चलेगा अभियान- बंधक श्रम (बंधुआ मजदूरी) कराने वालों के विरुद्ध मध्यप्रदेश का श्रम विभाग 9 फरवरी 'बंधक श्रम उन्मूलन दिवस' से विशेष अभियान भी शुरू करने जा रहा है। उल्लेखनीय है कि श्रम मंत्री की पहल पर विभाग ने बाल एवं बंधक श्रम को रोकने और जागरुकता लाने एक विशेष 'वेदा पहल' की शुरुआत की है।

कार्यशाला के बिंदु

बाल एवं कुमार श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986 के अंतर्गत राज्य एक्शन प्लान के प्रभावी क्रियान्वयन पर चर्चा होगी। इसमें अधिनियम के अंतर्गत निरीक्षण, पहचान, बचाव एवं पुनर्वास की प्रक्रिया पर चर्चा की जाएगी।

उमरिया सबसे ठंडा, रात का पारा 7 डिग्री रहा

भोपाल, इंदौर, ग्वालियर सहित 10 जिलों में हल्का कोहरा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में तेज सर्दी का दौर जारी है। प्रदेश के कई शहरों में बीती रात तापमान में गिरावट दर्ज की गई। 11 शहरों में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहा।

उमरिया सबसे ठंडा शहर रहा, जहां पारा गिरकर 7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। भोपाल, इंदौर और ग्वालियर में न्यूनतम तापमान 11 डिग्री दर्ज किया गया, जबकि जबलपुर में 10.8 डिग्री और उज्जैन में 13 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के अनुसार, उमरिया के बाद रीवा दूसरा सबसे ठंडा शहर रहा। यहां न्यूनतम तापमान 7.4 डिग्री दर्ज किया गया।

खजुराहो में भी 7.4 डिग्री, मंडला में 7.9 डिग्री, नौगांव में 8.8 डिग्री, सतना में 8.9 डिग्री, राजगढ़ और शिवपुरी में 9 डिग्री, पचमढ़ी में 9.4 डिग्री तथा दमोह और मलाजखंड में 9.8 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया गया। इधर, प्रदेश में घने कोहरे का खास असर नहीं देखा गया। शनिवार सुबह भोपाल, उज्जैन, इंदौर, राजगढ़, रतलाम, मंडला, सतना समेत करीब 10 जिलों में मध्यम कोहरा दर्ज किया गया, जिससे सुबह के

समय हल्की ठंड और दृश्यता में कमी महसूस की गई।

8 फरवरी- हल्का कोहरा रहेगा। बारिश का अलर्ट नहीं है, लेकिन ठंड का असर बढ़ा हुआ रहेगा।

9 फरवरी- कई जिलों में हल्के से मध्यम कोहरा रहेगा। इस दिन बारिश का अलर्ट नहीं है।

नए सिस्टम का असर देखने को मिलेगा- पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 8 फरवरी से नया वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। जिसका असर फिर से प्रदेश में देखने को मिलेगा। 10 फरवरी से मावठा गिरने का अनुमान है।

7500 आरक्षक पदों के लिए फिजिकल टेस्ट इसी माह

23 फरवरी से प्रदेश के दस स्थानों पर होगी 800 मीटर दौड़, लंबी कूद, गोला फेंक टेस्ट

भोपाल (नप्र)। पुलिस आरक्षक के 7500 पदों के लिए हुई परीक्षा के लिए इसी माह 23 फरवरी से फिजिकल टेस्ट शुरू होंगे। पुलिस मुख्यालय ने इसके लिए प्रदेश के दस स्थानों का चयन किया है जहां भर्ती परीक्षा में चयनित उम्मीदवारों को परीक्षा के लिए हाजिर होना पड़ेगा। इस दौरान चयनित उम्मीदवारों को दौड़, लंबी कूद और गोला फेंक में अपनी दक्षता साबित करना होगी।

आरक्षक जीडी के 7500 पदों पर भर्ती के लिए कर्मचारी चयन मंडल द्वारा ऑनलाइन परीक्षा 30 अक्टूबर 2025 से 15 दिसम्बर 2025 कराई गई थी। परीक्षा के रिजल्ट 25 जनवरी 2025 को कर्मचारी चयन मंडल द्वारा वेबसाइट पर अपलोड किए गए हैं। इसके बाद अब शारीरिक दक्षता परीक्षा (पीपीटी) ली जाएगी। इसमें उम्मीदवारों को 800 मीटर दौड़, लंबी कूद और गोला फेंक तथा दस्तावेजों का परीक्षण दस स्थानों पर किया जाएगा। 23 फरवरी से 13 मार्च के बीच यह परीक्षा होगी जिसमें 2 मार्च, 3 मार्च और 8 मार्च को परीक्षा नहीं होगी। इन तिथियों में अवकाश रहेगा। फिजिकल टेस्ट रोज सुबह 6 बजे से शुरू होगा। ऑनलाइन परीक्षा में सफल उम्मीदवारों के लिए कर्मचारी चयन मंडल से सूचना पत्र जारी किए जाएंगे। फिजिकल टेस्ट के लिए आधार, ईकेवाईसी सत्यापन कराया जाएगा। उम्मीदवार को अपना आधार कार्ड साथ ले जाना होगा। साथ ही सभी मूल दस्तावेज भी स्वयं प्रमाणित छायाप्रति के साथ उपस्थित होना होगा।

इन दस स्थानों पर होगी शारीरिक दक्षता परीक्षा

- भोपाल में लाल परेड ग्राउंड जहांगीराबाद
- इंदौर में माउंटेड ट्रूप डिपार्टमेंट (एमटीडी) परिसर आरएपीटीसी
- जबलपुर में परेड ग्राउंड 6वीं वाहिनी एसएएफ रांझी
- ग्वालियर में परेड ग्राउंड 14वीं वाहिनी एसएएफ कम्पू
- उज्जैन में महानंदा एरीना ग्राउंड देवास रोड
- सागर में शासकीय इंदिरा गांधी इंजीनियरिंग कालेज बहेरिया
- रीवा में परेड ग्राउंड 9वीं वाहिनी एसएएफ
- बालाघाट में फुटबाल, हाकी ग्राउंड 36 वीं वाहिनी एसएएफ
- रतलाम में भगत सिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बस स्टैंड के पास
- मुरैना में परेड ग्राउंड 5वीं वाहिनी एसएएफ।

पुस्तक समीक्षा

दीपक गिरकर
समीक्षक

लघुकथाओं में घर-परिवार और मानवीय संवेदनाएं

साहित्यिक स्थान आज भारतीय लघुकथा जगत में अत्यंत प्रतिष्ठित है और इसकी मुख्य वजह उनके कथानक का घर और परिवार की गहराईयों पर केंद्रित होना है। उनकी रचनाएँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि वे सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ के दर्पण के रूप में भी कार्य करती हैं। घर-परिवार से जुड़े उनके कथानक पाठक को ऐसा अनुभव कराते हैं कि घटनाएँ मानो उनकी आँखों के सामने घटित हो रही हों। यही जीवंतता उनकी साहित्यिक क्षमता का प्रमुख सूचक है। पवन शर्मा की लघुकथाओं की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि वे रोजमर्रा की सामान्य घटनाओं और संबंधों को अत्यंत सूक्ष्म और प्रामाणिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाएँ - स्नेह, अपनत्व, मोह, तिरस्कार, आशा और हताशा समानांतर रूप से चलती हैं और पाठक इन भावनाओं के बीच खुद को सहज रूप से पहचान लेता है।

'छाँव जैसी औरतें' वरिष्ठ लघुकथाकार पवन शर्मा का पांचवा लघुकथा संग्रह है। देश के विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में पवन शर्मा की लघुकथाएँ, कहानियाँ, कविताएँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। इस संग्रह की भूमिका वरिष्ठ लघुकथाकार श्री बलराम अग्रवाल ने लिखी हैं। इस संग्रह की भूमिका में वरिष्ठ लघुकथाकार श्री बलराम अग्रवाल ने लिखा हैं - नवें दशक के काल से ही पवन शर्मा पारिवारिक जीवन के उतार-चढ़ाव, पीड़ा-व्यथा आदि को लघुकथाओं में अंकित करने वाले सिद्धहस्त चितेरे रहे हैं। उनकी लघुकथाएँ पढ़ते हुए हमेशा यह लगता रहा कि इस कथाकार ने निम्न मध्य आयवर्ग के त्रासों और टीसों को बहुत नजदीक से देखा और झेला है।

पवन शर्मा का साहित्यिक स्थान आज भारतीय लघुकथा जगत में अत्यंत प्रतिष्ठित है और इसकी मुख्य वजह उनके कथानक का घर और परिवार की गहराईयों पर केंद्रित होना है। उनकी रचनाएँ केवल व्यक्तिगत अनुभवों का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि वे सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ के दर्पण के रूप में भी कार्य करती हैं। घर-परिवार से जुड़े उनके कथानक पाठक को ऐसा अनुभव कराते हैं कि घटनाएँ मानो उनकी आँखों के सामने घटित हो रही हों। यही जीवंतता उनकी साहित्यिक क्षमता का प्रमुख सूचक है। पवन शर्मा की लघुकथाओं की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि वे रोजमर्रा की सामान्य घटनाओं और संबंधों को अत्यंत सूक्ष्म और प्रामाणिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाएँ - स्नेह, अपनत्व, मोह, तिरस्कार, आशा और हताशा समानांतर रूप से चलती हैं और पाठक इन भावनाओं के बीच खुद को सहज रूप से पहचान लेता है। इस दृष्टि से, उनकी लघुकथाएँ केवल कथ्य का प्रदर्शन नहीं करतीं, बल्कि समाज में विद्यमान पारिवारिक और मानवीय संरचनाओं की जटिलताओं को भी उजागर करती हैं।

'छाँव जैसी औरतें' लघुकथा स्त्रियों की निस्वार्थ सेवा और धैर्य को उजागर करती है। धूप और छाँव का प्रतीकवाद यह दिखाता है कि महिलाएँ अक्सर अनदेखी रहते हुए परिवार और समाज में सहारा देती हैं। लघुकथा में आरव की दृष्टि और संवाद, पीढ़ियों के बदलते नजरिए का संकेत देते हैं, जहाँ महिलाएँ सिर्फ छाँव नहीं, बल्कि अपनी इच्छाओं और पहचान के साथ स्वतंत्रता भी महसूस कर सकती हैं। सरल भाषा और संवेदनशील चित्रण इस लघुकथा को भावनात्मक और प्रभावशाली बनाते हैं।

'गंगा बुआ' लघुकथा प्रकृति और मानवीय संबंध के भाव को सरल और मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है। गंगा बुआ और नदी का रिश्ता गहरे प्रतीकात्मक हैं, जैसे नदी के बिना उनका अस्तित्व अधूरा हो। नदी का सूख जाना केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि अकेलेपन और जीवन के अंत का संकेत बन जाता है।

'वक्त या ज़िंदगी' लघुकथा वक्त और ज़िंदगी के बीच के सूक्ष्म लेकिन गहरे अंतर को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। संवाद के माध्यम से कथा जीवन की भागदौड़ में खोए मानवीय रिश्तों और भावनाओं की याद दिलाती है। पिता का पात्र अनुभव और जीवन-दर्शन का प्रतीक बनकर उभरता है, जबकि अजय आधुनिक व्यक्ति की मानसिकता का

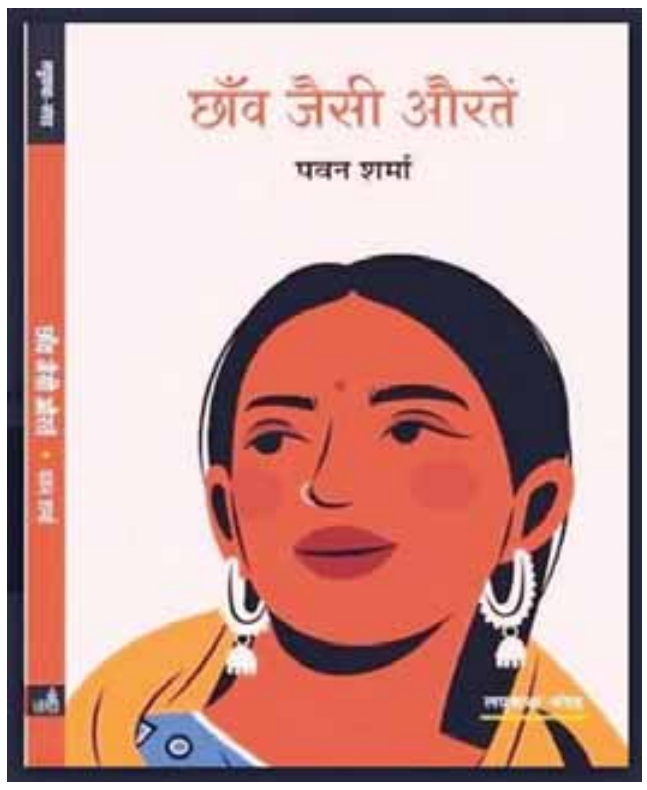

प्रतिनिधित्व करता है। कथा का अंत आत्मबोध और भावनात्मक परिवर्तन के साथ होता है, जो इसे मार्मिक और प्रेरक बनाता है।

'दूसरा चेहरा' लघुकथा में संवेदना का भाव स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त हुआ हैं। 'अंदर कोई रहता है', 'दूसरा कमरा', 'हँसते चेहरे', 'उजाला', 'अंतिम दृश्य', 'रूह की रौशनी' जैसी लघुकथाएँ लंबे अंतराल तक जेहन में प्रभाव छोड़ती हैं।

शैलीगत दृष्टि से पवन शर्मा की लघुकथाएँ सरल भाषा और सटीक संवादों के माध्यम से गहन प्रभाव डालती हैं। वे किसी भी कथा को अतिशयोक्ति या भावनात्मक अधिभार के बिना प्रस्तुत करते हैं, जिससे पात्रों की मनोस्थिति, उनकी संवेदनाएँ और उनके रिश्तों की नाजुकता पूरी तरह पाठक के अनुभव का हिस्सा बन जाती है। यही कारण है कि उनके लेखन में सामान्य जीवन के संघर्ष—जैसे पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ, और व्यक्तिगत आकांक्षाएँ—गहन और मार्मिक प्रतीत होती हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से भी पवन शर्मा की लघुकथाएँ महत्वपूर्ण हैं। वे आधुनिक परिवारों के संघर्ष, रिश्तों में संवादहीनता, पीढ़ियों के बीच की दूरी और मानवीय मूल्य की चिंता को सूक्ष्म दृष्टि से चित्रित करते हैं। उनके पात्र आम होते हुए भी विशिष्ट हैं, क्योंकि वे हर पाठक की स्वयं की जिंदगी से सीधे जुड़ते हैं। इस प्रकार, पवन शर्मा की लघुकथाएँ केवल साहित्यिक सौंदर्य का अनुभव नहीं करातीं, बल्कि पाठक को सामाजिक, नैतिक और मानवीय विमर्श में भी शामिल करती हैं।

संक्षेप में, पवन शर्मा की लघुकथाएँ घर-परिवार और मानवीय संवेदनाओं के उत्थान में विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनका साहित्यिक योगदान इस तथ्य से भी मापा जा सकता है कि उन्होंने सामान्य जीवन की घटनाओं को न केवल कथा का आधार बनाया, बल्कि उन्हें मानवीय अनुभव, सामाजिक यथार्थ और भावनात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत किया। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ आज भी पाठक के मन में लंबे समय तक गूंजती हैं और उन्हें सोचने, समझने और अनुभव करने पर विवश करती हैं। कथ्य, भाषा और विषयवस्तु की दृष्टि से यह संग्रह अत्यंत सशक्त है, जो पाठकों के हृदय को छूता है और उन्हें सोचने को विवश करता है। पवन शर्मा की लेखनी साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध है।

पुस्तक – छाँव जैसी औरतें (लघुकथा संग्रह)
लेखक – पवन शर्मा
प्रकाशक – बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य – 249/- रूपए

कहानी

गंगा गाय

सुधीर कुमार सोनी

को मल नरम सुबह आहिस्ते आहिस्ते अपनी चादर को पसार रही थी। कस्बे की मुख्य सड़क में अभी भी सन्नाटा पसरा हुआ था। चाय की गुमटियों में चाय खौल रही थी। चाय के पतीले से भाप उड़कर हवा में घुल रही थी। होटलों में नाश्ता तैयार हो रहा था। दस दस मिनट के अंतराल में यात्री बस आ जा रही थी। प्रभुलाल पाण्डेय जी प्रतिदिन की तरह सुबह सुबह अपने घर के बाहर चबूतरे पर नीम की दातून करते हुए सड़क की आवाजाही को निहार रहे थे। मुख्य सड़क में स्थित एक घर में,वे किराये से रहते थे और पच्चीस मीटर की दूरी पर ही बस स्टैंड था।बस स्टैंड होने के कारण आसपास की चाय की गुमटियां और होटल सुबह मुँह-अंधेरे ही खुल जाती है। यात्री बसों का आना जाना भी सुबह पाँच बजे ही आरम्भ हो जाता है। प्रभुलाल जी दातून करते-करते चौंक गये जब अचानक उनके घर के सामने एक यात्री बस आकर रुकती है और ड्रायवर अपनी सीट पर बैठे- बैठे ही आवाज देता है 'पंडित जी नमस्कार, माताजी की तबियत ठीक नहीं है। अस्पताल में भर्ती थी,कल ही छुट्टी हुई है। आप को भैया ने बुलाया है।वापसी में ग्यारह बजे मेरे साथ चलना आप' इतना कहकर ड्रायवर गाड़ी लेकर आगे बढ़ जाता है। पांडेय जी को ड्रायवर की बात सुनकर अपने माताजी की चिंता होने लगती है। वे घर वापसी की तैयारी में लग जाते हैं।

वे घर के आँगन के कोने में बंधे अपनी गाय जिसे वे गंगा नाम से पुकारते हैं उसके पास जाकर सहलाने लगते हैं और गंगा को सम्बोधित कहकर कहते हैं 'गंगा माँ हम दो दिन के लिए गांव जा रहे हैं, राजा से कह देंगे वह चारा दे दिया करेगा ।' वे पास ही रखे छोटी सी बाल्टी में गंगा गाय का दूध दूहने लगते हैं। दूध दूहने का काम खत्म कर वे अपने मकान मालिक राजा का दरवाजा खटखटाते हैं 'राजा, अरे भाई राजा' पाँच मिनट तक दरवाजा नहीं खुलता तो प्रभुलाल जी फिर एक बार खटखटाते हैं 'राजा तुम एक बार सुनकर कभी दरवाजा नहीं खोलते हो' पाण्डेय जी ने नाराजगी जाहिर करते हुए बाहर से ही राजा को कहा। दरवाजा फिर भी नहीं खुला। उन्होंने फिर दरवाजा खटखटाया। थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला और राजा ने कहा 'पंडित जी क्या हुआ, सुबह-सुबह किस पर नाराज हो रहे हो ?'

'अरे भई यहाँ तो हम तुम ही हैं और तुम पर ही नाराज हो रहा हूँ'

'क्या हुआ ?' राजा ने कहा।

'मैं दो दिन के लिए गाँव जा रहा हूँ, माताजी की तबियत ठीक नहीं है।भर्ती भी किया था भाई ने, अब घर आ गई है।सोच रहा हूँ देखकर आ जाऊँ । गंगा माता को तुम चारा देते रहना'।

'मगर गंगा माँ तो आप से ही सम्हलती है पंडित जी' राजा ने कहा।

'अरे भाई दो दिन की बात है, देख लो और यह दूध भी रखो अभी अभी दूहा है इसे' पाण्डेय जी ने दूध का बर्तन राजा को पकड़ा दिया।

'कब जा रहे हैं पंडित जी? राजा ने पूछा'

ग्यारह बजे की बस लेकर ड्रायवर लौटेगा, उसी बस में जाऊँगा। 'ड्रायवर पड़ोसी है हमारा गाँव में ।' पंडितजी ने राजा से कहा।

सुबह के सात बजकर बीस मिनट हो रहे थे। पाण्डे जी स्नान किया और पूजा पाठ में लग गये। नाश्ता बनाकर खाये और कपड़ा प्रेस किया। आलमारी से फाइल निकालकर खोला और टेबल में रखकर खड़े खड़े ही लिखा और लिफाफे डालकर बंद कर दिया। प्रभुलाल जी घड़ी की ओर देखा तो घड़ी साढ़े दस बजा रही थी।पंडित जी अपना सामान लेकर बाहर निकले और एक बार फिर राजा का दरवाजा खटखटाया।राजा ने दरवाजा खोला और कहा 'तैयारी हो गयी पंडित जी'

'हमारा सामान तैयार है, भाई राजा तुम गंगा को चारा देते रहना और सुनो संजय को यह लिफाफा देना। तीन की छुट्टी का आवेदन पत्र है वह कॉलेज में दे देगा।' अपने सामान को जमीन में रखते हुए पाण्डेय जी ने कहा और घर के सामने बने चबूतरे में बैठ गए।राजा भी पास आकर खड़ा हो गया।

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद बस घर सामने खड़ी हो गई। 'बहुत धन्यवाद तारा भाई आपका' पाण्डेय जी ड्राइवर से कहा और बस में चढ़ गए। राजा ने उनको सामान पकड़ा दिया। हाथ हिलाकर राजा ने पाण्डेय जी को विदा किया।

प्रभुलाल पाण्डेय जी यहीं पाटन तहसील में शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।बीस किलोमीटर की दूरी पर उनका गाँव सिमोदा हैं।आसपास के गाँव के लोग पाण्डेय जी के परिवार से बहुत अच्छी तरह परिचित हैं। बहुत से परिवार के बच्चों को उन्होंन गाँव के महाविद्यालय में पढ़ाया है।अगले दो साल बाद वे रिटायर होने वाले हैं ।

दूधवाले उन्हें पानी मिलाकर दूध देते हैं और उन्हें पानी मिला दूध पीना अच्छा नहीं लगता है, इसीलिए वे अपने घर से एक गाय ले आए थे।उनके पास एक बहुत पुरानी लूना थी।उसी लूना के पीछे रस्सी से गाय को बाँधकर वे ले आए थे।अपनी गाय की वे बहुत सेवा करते, और उसका ध्यान रखते हैं।एक दो घंटे तक उसे वे नहलाते रहते। गाय और पाण्डेय जी का प्रेम पूरे गाँव में चर्चित है।गाय की सेवा करते-करते वे शोध कर रहे छात्रों को हिंदी साहित्य के विषय की उनकी थीसिस को भी पूरा कराते जाते हैं। पाण्डेय जी किराये के जिस मकान में रहते हैं, उसमें बड़ा सा आँगन है।उसी आँगन में वे खुले में बैठकर वे नहाते हैं। बाथरुम में नहाना उन्हें रास नहीं आता है।

राजा ने उनसे कहा था, 'भई पंडित जी आप खुले में डंडे वाली चड्डी पहनकर नहाते हो, अच्छा नहीं लगता।आसपास महिलाएं रहती हैं।'

वे कह देते हैं 'राजा भाई खुले में नहाने का आनंद ही अलग है, बंद कमरे में हमसे नहीं नहाया जाता।'

पाण्डेय जी के घर जाने के बाद राजा सोचने लगा गंगा गाय की देखरेख तो करना ही पड़ेगा।दो तीन की बात है। उन्होंने अपनी मताजी से भी कह दिया कि गंगा को उनको रोटी-गुड़ खिला दिया करो। गंगा गाय को नहलाने का कार्य राजा और उनकी माँ से नहीं हो पाया।

उन्होंने उसे खोला भी नही, एक दिन ऐसे ही निकल गया।उस दिन ग्वाला जो गाय और भैंसों को चराने घास जमीन ले जाता था वह भी नहीं आया।राजा ने भी गंगा को नहीं खोला। गाय बँधे-बँधे ऊब गई थी, ऐसा राजा को महसूस हुआ। दूसरे दिन राजा ने ग्वाले को डाँट दिया। 'तुम्हें मालूम है कि पंडित जी अपने गाँव गए हैं फिर भी तुम नहीं आए, हमको नहीं आता नहलाना और चराने के लिए छोड़ना ?' ग्वाले ने भी अपना कोई बहाना बना दिया।

ग्वाले ने गाय का दूध एक बर्तन में दूहा और राजा को दे दिया, और कहा 'हम ले जा रहें चराने, चार बजे सबको छोड़ते जाएंगे तो यहीं बाँध देंगे।' 'हाँ भाई इतनी मेहरबानी अवश्य करना' राजा ने कहा और अपने कार्य मे लग गया।

शाम के छह बजे गाय को घास मैदान ले जाने वाला ग्वाला राऊत राजा के घर दौड़ता हुआ आया,वह हांफ भी रहा था। उसने दरवाजा खटखटाया। राजा ने दरवाजा खोला तो देखा ग्वाला हांपते हुए खड़ा था। 'क्या हुआ' राजा ने पूछा

'गंगा इधर आयी थी क्या ?'

'गंगा को घास को घास चरवाने तुम ले गए थे ना'

'ले तो हम गए थे, मगर कब कहाँ चली गई पता ही नहीं चला।' ग्वाले ने हड़बड़ाते हुए कहा। राजा वहीं चबूतरे पर बैठ गया और बोला 'थोड़ी देर में अँधेरा भी हो जायेगा। चलो गाड़ी लेकर कहीं ढूँढते हैं।' दोनों गाड़ी लेकर निकल गए।

प्रभुलाल पाण्डेय जी अपने घर में माँ की देखभाल के लिए हॉल में ही सो रहे थे।उनकी पत्नी भी हॉल में ही थी।उनकी माताजी की हालत अब पहले से बेहतर थी ।माताजी नब्बे बसंत देख चुकी थी। डॉक्टर ने आराम करने की सलाह दी थी और प्रसन्न रहने को कहा था।सुबह के पाँच बज रहे थे। भोर के उजाले होने में अभी देर थी।पाण्डेय जी अचानक जाग गये घर के बाहर किसी गाय के चिल्लाने की आवाज आयी।उन्हें लगा कि यह आवाज उनके गंगा गाय से मिलती जुलती है।वे दरवाजा खोलकर तुरंत बाहर निकले तो देखे गंगा ही खड़ी थी।उन्हें आँखों से विश्वास ही नहीं हुआ।वे दौड़कर गए और गंगा से लिपट गए। उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह रही थी और आँसू गंगा गाय के आँखों के पलक को भिगों रही थी।वे कुछ देर उससे लिपटे रहे। फिर उसके पैरों में गिर गए। बैठे-बैठे ही उन्होंने पत्नी को आवाज दी 'सुनती हो, बाहर आओ देखो कौन आया है।'

पाण्डेय जी की पत्नी बाहर निकली और देखी कि पाण्डेय जी गंगा गाय के पैरों में बैठे हुए हैं। वह भी दौड़ती हुई आई और गंगा से लिपटी गई खूब रोई, आँसू बहाए, क्योंकि गंगा उनसे वह बहुत दिनों से बिछड़ी हुई थी। गंगा अपने पैरों से पच्चीस किलोमीटर चलकर आ गयी थी। उसी रास्ते से जिस रास्ते से पांडेय जी गंगा को बांधकर उसे ले गये थे।

दोनों पति-पत्नी ने गया गंगा को आँगन में ले आए उसकी आरती की और आँगन में बांध दिया।गंगा गाय ने फिर से अपनी जगह ले ली थी।

गज़ल

दरिया

कमलेश कुमार दीवान

यूं अपनी ही रवानी से अनजान है दरिया
इस उसकी मेहरबानी से पशेमान है दरिया।

जाना था अभी उसको समुंदर की तरफ ही
घाटी की बेईमानी से बहुत परेशान है दरिया।

कभी कम तो तेज अब थमा सा ही रह गया
अपनी ही इस कहानी से कुछ हैरान है दरिया।

पहाड़ों से खिसकते रहा एक सैलाब सा धीरे
अपनी ही निगहबानी से असमान हैं दरिया।

लहरें हवा से आज भी क्यों उठ रही 'दीवान'
कुछ छोड़ निशानी से तेरी पहचान हैं दरिया।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

शुभम भवतु

रामेश्वरम तिवारी

सुबह-सुबह भक्त नहा-धोकर मंदिर पहुँचा। उसने दीप प्रज्वलित किया, दो अगरबत्ती जलाई, ग्यारह रुपए का प्रसाद और श्रीफल चढ़ाया, हाथ जोड़े, आँखें बंद की और आर्त्त स्वर में निवेदन किया- 'प्रभु! प्लीज प्लीज कुछ कीजिए!' तभी भक्त को अपने कानों में प्रभु की मधुर स्वर सुनाई दिए- 'भक्त क्या बात है! बड़े उद्विग्न, भयाक्रांत और घबराए हुए लग रहे होज! प्लीज़ के आगे भी कुछ कहोगेज या यूँ ही मेरे नाम की रट लगाए रहोगे।' भक्त- 'प्रभु! वो बात ऐसी है कि देश और दुनिया में घमासान मचा हुआ है। विभिन्न धर्मावलंबियों और देशों के मुखिया आपस में लड़-मरने पर आमादा हैं। उनके अहं की लड़ाई में अब तक कई निरीह और निर्दोष लोग बेमौत मारे जा रहे हैं। दुनिया भर में त्राहिमाम मचा हुआ है।'

प्रभु ने खेद प्रकट करते हुए कहा- 'भक्त! यह जो कुछ तुम्हारे देश या दुनिया के दूसरे देशों में मारामरी, खूखराबा हो रहा है। इसके लिए न तो मैं दोषी हूँ, न ही ज़िम्मेदार।

दरअसल तुम्हारी यह आदमजात क़ौम के नुमाइंदे अपने और दूसरे देशों की अवाम पर अपना रुआब गाँठना, अपनी हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं। दुनिया भर की सारी समस्याएँ ऐसे ही अहंकारी और उजबकों द्वारा पैदा की हुई हैं, अतः समाधान भी उन्हीं को आपस में मिल-बैठकर खोजना है।' प्रभु ने इतना कहा अपने कमल नयन बंद किए। भक्त को 'शुभम भवतु' का आशीर्वाद दिया और पलक झपकते ही अंतर्ध्यान हो गए!

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

नवशास्त्रीयतावाद, संघर्षमयी समय और कला में तानाशाही

देश में उथल-पुथल जैसा माहौल था और इसी वजह से दाविद् कभी पक्ष कभी विपक्ष की भूमिका में आ जाते थे पर तमाम झंझावातों से पार पाते हुए आपकी कृतियां निखरती जा रही थी, प्रतिनिधित्व की भूमिका में आ गई थीं आपकी कई कृतियां, जो कई बार विवाद का कारण भी बनी। राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों को चित्रित करना आपकी विशेषता हो गई थी। तीन भाइयों के शपथ और जोश के बीच गमों में झूलती बहन भाव, जिसको इस शपथ के परिणामस्वरूप अपने को खोने का डर था, साथी महिलाओं के चेहरे पर भी गम साफ दिखाई दे रहा है। डर और उत्साह जैसे भावों को एक ही फलक पर समेटे हुए है कृति 'द ओथ ऑफ होराथी'। यह चित्र नवशास्त्रीयतावाद के लिए महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। कृति 'सुकरात की मृत्यु' जो प्लेटो की रचना फीडो पर आधारित है, में सुकरात को अपने अंतिम समय में भी पथ से न डिगते हुए दिखाया गया है, अंतिम समय में भी शिष्यों को शिक्षा देने की भव्य मुद्रा, दूसरा हाथ जहर के प्याले की तरफ बढ़ता हुआ है ।

कलाकार हमेशा कुछ नया करने की सोचता है अलग बात है कि इस खोज में कई बार उसे पुनः वहीं पंहुच जाना होता है जहां से वो चला होता है पर इसी खोज में कभी ऐसे जगह पहुंच जाना होता है जो लोगों हेतु मिशाल बन जाता है। रॉकॉको शैली से लोग ऊब रहे थे, कलाकार विरोध के मूड में थे, फ्रेंच सत्ता के उथल-पुथल से खुद को बचा नहीं पा रहा था। आम जनमानस बदलाव की बयार को तड़प रही थी।

कलाकार भी इससे अछूते नहीं रहना चाहते थे। लुई पंद्रहवां को शासक बनने से पूर्व व बाद में भी काफी कुछ झेलना पड़ा पर कला में काफी अच्छा कार्य हुआ। पोंपेई के उत्खनन में ग्रीक की प्राचीनतम कलाकृतियां मिलीं जिस पर प्रसिद्ध जर्मन विद्वान विंकेलमान ने खूब सारे लेख लिखे। लोगों में ग्रीक कला एक बार पुनः आदर्श रूप में प्रस्तुत हुई। कलाकार भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। जॉक दाविद् भी यहां की यात्रा कर चुका था। नये पुराने का ये चक्र चलता ही रहता है। हमें लगता है कि हम कुछ नया कर रहे हैं जबकि वो पहले ही हो चुका होता है। नवशास्त्रीयतावाद में ग्रीक के आदर्श रूप का पुनः दर्शन तो है ही और मानव शरीर उनके सौंदर्य, वेशभूषा का भी आदर्श रूप दर्शित होता है खैर प्राप्त मूर्तियों एवं अवशेषों से कलाकार एक बार फिर कुछ नया करने की ताक में थे जिसमें प्रमुख भूमिका थी 30 अगस्त 1748 में पेरिस के एक समृद्ध परिवार में जन्में जॉक लुई डेविड (जॉक दाविद) की। पिता का साया बचपन में ही उठ गया था, जीवन संघर्समय हो गया था पर जल्द ही खुद को संभाल लिया था दाविद ने। वास्तुकारों के बीच रहना था। मां और चाचा को इनमें भविष्य का वास्तुकार नजर आ रहा था पर इनका मन चित्रों में रमता था लगातार ड्राइंग करना आदत में शुमार हो चुका था, आप जल्द ही एक महान कलाकार बनना चाहते थे, रॉकॉको शैली के चित्रकार बाउचर तथा कलाकार जोसेफ से सीखते हुए आप निरंतर अच्छा करते जा रहे थे। राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु कई बार विफलताओं से सामना हुआ पर निराशा को निराश होना पड़ा और आप अपने कृति 'एरासिस्ट्रेटस डिस्कवरिंग द कॉज़ ऑफ़ एंटिओकस डिसीज' (कैनवास पर तैल), का निर्माण करते हैं और प्रिक्स डी रोम से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। उपर्युक्त तैल चित्र में मरीज, बीमारी, एवं बीमारी के कारण का पता लगाने का प्रयास करता वैद्य है। माहौल गमगीन है। कृति ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है।

निकोलस पूसान तथा कैरेबेज्जियो जैसे 17वीं सदी के कलाकारों के चित्रों का अध्ययन करने का मौका भी आपको मिला। जर्मन कलाकार अंतोन रैफेलमिंग्स से परिचय के दरम्यान ही आपकी पहुंच विंकेलमैन के सैद्धांतिक लेखों तक हो सकी, पोंपेई से प्राप्त मूर्तियों और अवशेषों से प्रभावित होकर ही नवशास्त्रीयतावाद का उदय हो सका, ग्रीक शैली का अपडेट वर्जन कहा जा सकता है इस वाद को।

देश में उथल-पुथल जैसा माहौल था और इसी वजह से दाविद् कभी पक्ष कभी विपक्ष की भूमिका में आ जाते थे पर तमाम झंझावातों से पार पाते हुए आपकी कृतियां निखरती जा रही थी, प्रतिनिधित्व की भूमिका में आ गई थीं आपकी कई कृतियां, जो कई बार विवाद का कारण भी बनी। राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों को चित्रित करना आपकी विशेषता हो गई थी। तीन भाइयों के शपथ और जोश के बीच गमों में झूलती बहन भाव, जिसको इस शपथ के परिणामस्वरूप अपने को खोने का डर था, साथी महिलाओं के चेहरे पर भी गम साफ दिखाई दे रहा है। डर और उत्साह जैसे भावों को एक ही फलक पर समेटे हुए है कृति 'द ओथ ऑफ होराथी'। यह चित्र नवशास्त्रीयतावाद के लिए महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। कृति 'सुकरात की मृत्यु' जो प्लेटो की रचना फीडो पर आधारित है, में सुकरात को अपने अंतिम समय में भी पथ से न डिगते हुए दिखाया गया है, अंतिम समय में भी शिष्यों को शिक्षा देने की भव्य मुद्रा, दूसरा हाथ जहर के प्याले की तरफ बढ़ता हुआ है माहौल एकदम गमगीन है वहां उपस्थित सभी चेहरों पर गम तैर रहा है सिवाय मौत के द्वार पर खड़े सुकरात के। सफेद बिखरा-बिखरा सा लिबास ही उभर रहा है भव्य व्यक्तित्व के साथ। प्लेटो जो बिल्कुल ही शांत दिखाई दे रहा है के नीचे पड़ा संदेश पत्र भी व्यथित सा जान पड़ा है। सुकरात की तरफ जहर का प्याला बढ़ा रहा शिष्य इतना विवश है, दुखी है कि आंख मिला पाने की हिम्मत भी नहीं जुटा पा रहा। बाकी वहां मौजूद सभी के चेहरों पर दुख और संकट के भाव स्पष्टतः दिख रहे हैं। प्रकाश कृतिम है, शैली ग्रीक आधारित है पर चित्र जीवंत है। चित्र न्यूयॉर्क के म्युजियम में सुरक्षित है।

ब्रूट्स और उनके पुत्र संबंधी कृति में भी दुखों का पहाड़ उभर आया है। ब्रूट्स जो रोमन नेता था, की दर्दभरी दास्तां को बड़े ही जीवंत तरीके से उकेरने का प्रयास किया है दाविद् ने। आपके प्रमुख चित्रों में सिंहासनारोहण का भी जिक्र है। सामाजिक, राजनैतिक तथा ऐतिहासिक विषय, यूनान व रोम की वेशभूषा, हिष्ट-पुष्ट बलिष्ठ शरीर वाले आकृतियों के कलाकार दाविद में फ्रेंच राष्ट्रीय लोकसभा में चुनाव के बाद बहुत ही परिवर्तन देखने को मिला। कलाक्षेत्र में क्रांति सी आ गई पर फ्रेंच कलाक्षेत्र में खुद को ही श्रेष्ठ मनवाने के दंभ से ये बच नहीं सके। कला में तानाशाही रवैया अपनाने वाले कलाकार बन गये थे दाविद्। कई कलाकारों को इनके शैली पर काम करने हेतु मजबूर भी होना पड़ा। विवश होकर उनको भी नवशास्त्रीयतावाद का अनुयायी बनना पड़ा। रॉकॉको शैली लुप्तप्राय सी गई। नेपोलियन के राजा बनते ही दाविद् प्रमुख राजचित्रकार के रूप में नियुक्त हुए। बची खुची कसर अब पूरी हुई और कला के लगभग सभी विधाओं पर दाविद् की तानाशाही भारी पड़ने लगी। प्राचीनता की छाप लगभग हर जगह दिखने लगी। कृति 'सबाइन महिलाओं का हस्तक्षेप में' युद्ध और उसके विभीषिका को दर्शाने का प्रयास हुआ है। तलवार ताने योद्धाओं के बीच सबाइन महिलाएं उन्हें युद्ध करने से रोकने के प्रयास में दिखाई गई हैं। कुछ महिलाएं बच्चों को बचाने का कार्य भी कर रहीं हैं जो भविष्य को सम्हालने को दर्शाता है। युद्ध के कारण अस्त व्यस्त हुआ जीवन साफ झलक रहा है कृति में। डर को दिखा पाने में पूरी तरह सफल हुआ है कलाकार। कलाकार में जेल से वापसी के बाद कुछ बदलाव भी दिखे और उसको लगने लगा था कि नवशास्त्रीयतावाद के मूल में जो भी नियम हमने गढ़ें हैं वो इतने कठिन हैं कि बहुत दिनों तक नहीं टिक सकते। एक दुर्घटना की वजह से 1825 को इस महान कलाकार की मृत्यु हो गई। जल्दी ही उसके थोपे गये नियमों से बाकी कलाकार खुद को आजाद कर लिए और कला में एक नये वाद की ओर बढ़ चले। चित्र साभार गूगल से है।

वेब सीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

चन्द्रयान दो की विफलता पर सही परिप्रेक्ष्य दर्शाती सीरिज

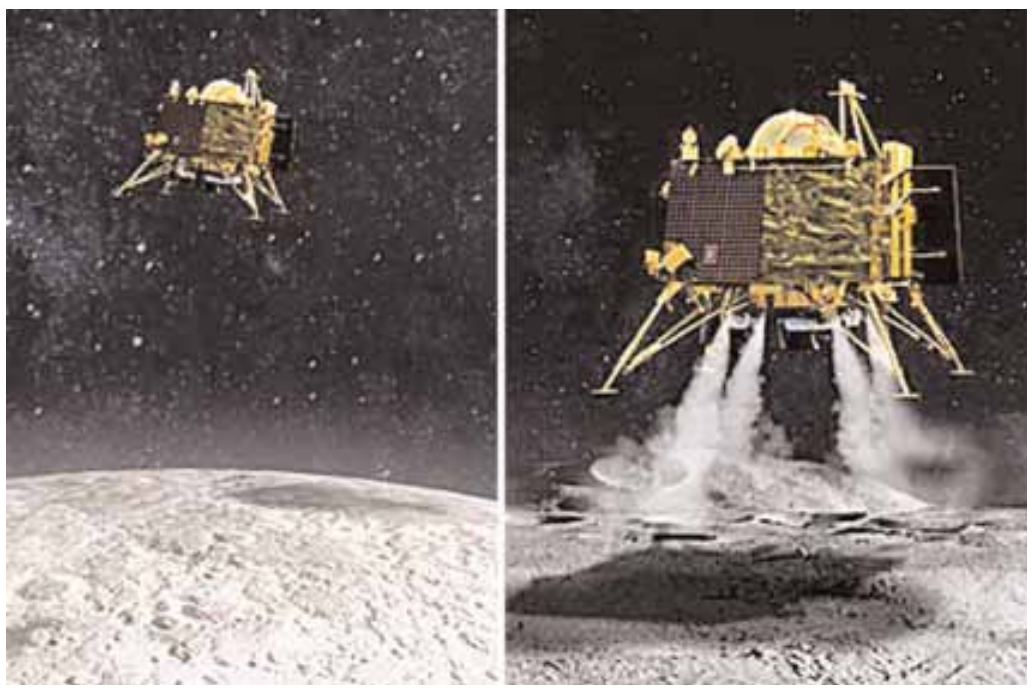

किसी सत्य घटना के सार तत्व को केन्द्र में रखकर किसी फिल्म अथवा वेबसीरिज़ की बुनावट रोचक प्रस्तुति हो सकती है मगर ऐसा कोई भी रचनाकर्म आसान नहीं होता है क्योंकि इसमें तथ्यों के साथ गैरज़रुरी छेड़छाड़ की आशंका रहती है। भारत की अंतरिक्ष विज्ञान में प्रभावी दखल की एक ऐसी ही बड़ी घटना थी 'मिशन चन्द्रयान दो'। लगभग हर भारतीय को आज़ भी वह रात याद है जब चंद्रयान-दो का लैंडर आखिरी पल में सम्पर्क खो बैठा था। कुछ सेकण्ड में पूरी उम्मीद टूट गई थी और माहौल एकदम निःशब्द हो गया था। वेब सिरीज - 'स्पेस जेन-चंद्रयान' भी उन्हीं लम्हों को एक पटकथा में पिरोकर शुरु होती है।

पाँच एपिसोड की इस सिरीज में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि हमारे वैज्ञानिकों ने उस एक विफलता के बाद खुद को कैसे संभाला और चंद्रयान-तीन की तैयारी में वे कैसे जुट गये ? शुरुआत काफी भावुक और अच्छी लगती है, लेकिन सीरिजों जैसे-जैसे आगे बढ़ती है उसका समग्र प्रभाव थोड़ा कमजोर सा होने लगता है। सीरिज़ की कहानी चन्द्रयान- दो की असफलता, इसरो प्रमुख शंकरन नायर (यह भूमिका उदय महेश ने निभाई है) और वैज्ञानिक सलाहकार राकेश मोहंती (गोपाल दत्त) के डर और घबराहट के आसपास घूमती है। इसके बाद प्रोजेक्ट डायरेक्टर यामिनी मुदलियार (श्रिया सरन) व नेविगेशन एक्सपर्ट अर्जुन वर्मा (नकुल मेहता) पर आई जिम्मेदारी की बात चलती है । कथाक्रम आगे तब बढ़ता है जब कथासूत्र जाँच अधिकारी सुदर्शन रमैया (प्रकाश बेलवाड़ी) के हाथ लगता है। सुदर्शन बाकी लोगों की तरह गुस्से में नहीं पड़ते हैं बल्कि शान्ति से गलती समझने की कोशिश करते हैं। बाद में जब शंकरन रिटायर होते हैं और रमैय्या मजबूरी में ही सही, पूरे स्पेस सेंटर के प्रमुख बन जाते हैं। आगे कहानी चंद्रयान-तीन की तैयारी की ओर मुड़ जाती है। इस बीच कहानी में कई मोड़ आते हैं। कोविड-19 के दरमियान काम का बार-बार रुकना और रूस का लूना-पच्चीस लॉन्च करने का अचानक ऐलान होना, सब मिलकर मिशन पर दबाव बढ़ा देते हैं। वैसे कहानी का सकारात्मक पक्ष यह है कि कहानी यह बताती है कि पहली नाकामी ने टीम को गिराया नहीं, बल्कि थोड़ा और मजबूत ही किया है।

सिरीज़ में दो ट्रैक साथ-साथ चलते हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों की मेहनत वाला ट्रैक अच्छा लगता है, वहीं अर्जुन वर्मा की निजी फैमिली स्टोरी उतनी जमती नहीं और थोड़ी अलग-थलग सी लगती है। रमैय्या का बैकग्राउण्ड और उनके साथ हुई सामाजिक परेशानियां काफी अच्छे से दिखाई गई हैं और कहानी में गहराई भी लाती हैं।हालांकि, सच्चाई यह है कि चंद्रयान की असली चुनौतियों को और ज्यादा समय मिलता, तो कहानी ज्यादा असरदार होती। दानिश सैत थोड़ी राहत देते हैं, लेकिन उनका चरित्र छोटा है। गोपाल दत्त का चरित्र ज़रूरत से ज्यादा चिड़चिड़ा और सख्त दिखाया गया है, जो कहानी से थोड़ा बाहर सा लगता है। प्रकाश बेलवाड़ी अच्छे लगे, लेकिन उनका चरित्र भी उतना खुलकर नहीं लिखा गया जितना लिखा जा सकता था।

अगर आपको अंतरिक्ष मिशन और इसरो की मेहनत में दिलचस्पी है, तो यह सिरीज एक बार देखी जा सकती है। कुछ हिस्से अच्छे लगेंगे और थोड़ी प्रेरणा भी मिलती है। लेकिन अगर आप बहुत ज्यादा रोमांच, गहराई या लगातार दिलचस्प चलने वाली कहानी की उम्मीद कर रहे हैं, तो यह सिरीज आपको थोड़ी कमजोर लगेगी।कई जगह कहानी धीमी पड़ जाती है। कई सीन्स ओवर ड्रामेटिक महसूस होता है। कुल मिलाकर, ये सीरीज बहुत उम्मीदें लगाकर देखेंगे तो थोड़ी निराशा हो सकती है।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

अशोक श्रीवास्तव

सेवानिवृत्त अधिकारी भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्

प्रवासी भारतीयों के साथ उभरता रणनीतिक भारत

विदेशों में बसे भारतीय अब केवल भावनात्मक जुड़ाव या आर्थिक संसाधनों के प्रतीक नहीं हैं। वे भारत की सभ्यता, मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना के जीवंत प्रतिनिधि बन चुके हैं। अमृत महोत्सव के दौरान अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों, अफ्रीका और एशिया में आयोजित वंदे मातरम् गायन, तिरंगा यात्राएँ, सांस्कृतिक महोत्सव और डिजिटल संवाद कार्यक्रमों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की पहचान अब भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रही। भारत आज एक ऐसी सभ्यता के रूप में उभर रहा है जिसकी सांस्कृतिक उपस्थिति वैश्विक है। इस सांस्कृतिक विस्तार का प्रतीकात्मक उदाहरण 2024 में देखने को मिला, जब जर्मनी की प्रसिद्ध गायिका कासान्द्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में अच्युतम् केशवम् भजन प्रस्तुत किया। यह केवल सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं थी, बल्कि इस बात का संकेत था कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्य अब वैश्विक समाज में स्वीकृति और सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। यही सॉफ्ट पावर आगे चलकर रणनीतिक शक्ति का आधार बनती है।

संविधान सभा में बहसों के दौरान गोविंददासजी, जबलपुर ने स्पष्ट किया था–

'मैं ऐसा नहीं सोचता कि हम वर्तमान भारत को ऋग्वेद काल का भारत बना सकते हैं, लेकिन यह बात स्वीकार करते हुए भी मैं स्पष्ट करना चाहूंगा कि हमें अपने आद्य इतिहास की धरोहर–सभ्यता और संस्कृति की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। हमें आधुनिक विश्व की वे सब चीजें अपनानी चाहिए जिनसे हमारी जरूरतें पूरी होती हैं। आधुनिक भारत का निर्माण इस तरह किया जाना चाहिए कि हमारी संस्कृति और सभ्यता अक्षुण्ण रहें।'

यह कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है। लगभग 150 वर्ष पूर्व बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वंदे मातरम् ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक आंदोलन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे सांस्कृतिक और भावनात्मक ऊर्जा से सशक्त किया। आज, जब देश 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है और विकसित भारत की ओर अग्रसर है, तब यही चेतना एक नए रणनीतिक रूप में सामने आती है और इस परिवर्तन की धुरी प्रवासी भारतीय समुदाय बनकर उभरी है।

विदेशों में बसे भारतीय अब केवल भावनात्मक जुड़ाव या आर्थिक संसाधनों के प्रतीक नहीं हैं। वे भारत की सभ्यता, मूल्यों और लोकतांत्रिक चेतना के जीवंत प्रतिनिधि बन चुके हैं। अमृत महोत्सव के दौरान अमेरिका, यूरोप, खाड़ी देशों, अफ्रीका और एशिया में आयोजित वंदे मातरम् गायन, तिरंगा यात्राएँ, सांस्कृतिक महोत्सव और डिजिटल संवाद कार्यक्रमों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की पहचान अब भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रही। भारत आज एक ऐसी सभ्यता के रूप में उभर रहा है जिसकी सांस्कृतिक उपस्थिति वैश्विक है।

इस सांस्कृतिक विस्तार का प्रतीकात्मक उदाहरण 2024 में देखने को मिला, जब जर्मनी की प्रसिद्ध गायिका कासान्द्रा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में अच्युतम् केशवम् भजन प्रस्तुत किया। यह केवल सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं थी, बल्कि इस बात का संकेत था कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्य अब वैश्विक समाज में स्वीकृति और सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। यही सॉफ्ट पावर आगे चलकर रणनीतिक शक्ति का आधार बनती है।

प्रवासी भारतीयों की भूमिका केवल संस्कृति तक सीमित नहीं है। खेल के मैदान पर भी भारत की वैश्विक छवि नए आयाम ग्रहण कर रही है। क्रिकेट विश्व कप जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर 20 टीमों में से 9 टीमों में लगभग 40 खिलाड़ी भारतीय मूल के हैं। कनाडा की टीम में 11 खिलाड़ी, कप्तान दिलप्रीत बाजवा के नेतृत्व में, भारतीय विरासत से जुड़े हैं। ओमान की टीम में 7 खिलाड़ी, यूएई में 7, अमेरिका में 9 और न्यूज़ीलैंड व दक्षिण अफ्रीका में भी भारतीय मूल के खिलाड़ी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।

यह केवल आंकड़ों का संकेत नहीं है, बल्कि यह इस तथ्य को रेखांकित करता है कि वैश्विक खेल जगत भारतीय प्रतिभा, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता पर भरोसा कर रहा है। विदेशी टीमें अब प्रवासी भारतीयों को केवल खिलाड़ी नहीं, बल्कि रणनीतिक स्तंभ मान रही हैं।

इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की प्रवासी नीति भी विकसित हुई है। अब यह नीति केवल पहली या दूसरी पीढ़ी तक सीमित नहीं रही। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति स्तर से मिले संकेत बताते हैं कि छठी और सातवीं पीढ़ी तक OCI कार्ड जैसी व्यवस्थाओं पर गंभीर विचार किया जा रहा है। इसका उद्देश्य उभरती Generation Beta और उससे आगे की पीढ़ियों को भारत से जोड़ना है–ऐसी पीढ़ियाँ जो डिजिटल और बहुसांस्कृतिक परिवेश में पली-बढ़ी हैं, पर अपनी जड़ों से जुड़ाव बनाए रखना चाहती हैं। OCI जैसी व्यवस्थाएँ उन्हें केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि संवैधानिक और सांस्कृतिक संबंध भी प्रदान करती हैं।

प्रवासी भारतीयों की भूमिका आज सॉफ्ट पावर से आगे बढ़कर रणनीतिक और कूटनीतिक आयाम ग्रहण कर चुकी है। इसका एक अत्यंत अर्थपूर्ण उदाहरण तब सामने आया, जब यूरोपीय संघ के राष्ट्रपति एंटोनियो कोस्टा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के दौरान अपना OCI कार्ड दिखाते हुए कहा–

'मैं यूरोपीय परिषद का अध्यक्ष हूँ, लेकिन मैं भारत का ओवरसीज़ सिटिजन भी हूँ। मुझे गोवा में अपनी जड़ों पर बहुत गर्व है।'

यह वक्तव्य दर्शाता है कि भारतीय पहचान अब केवल सांस्कृतिक स्मृति तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैश्विक राजनीति और कूटनीति में भी मानवीय और भावनात्मक आयाम ग्रहण कर चुकी है। इसी भावना का पालन करते हुए, हॉर्वर्ड की ग्रेजुएट चार्मी कपूर ने भी अमेरिका की आर्थिक समृद्धि छोड़कर भारत को चुना। वह कहती हैं-

'अमेरिका में पैसा और आज़ादी है, लेकिन हर चीज़ प्लानिंग और अकेलेपन से भरी है। भारत में सुबह की चाय, बिना अपॉइंटमेंट की हंसी–यही असली सुकून है। पैसा जरूरी है, पर सुकून नहीं खरीदा जा सकता।'

चार्मी के अनुभव यह दिखाते हैं कि भारत का आकर्षण केवल आर्थिक अवसरों तक सीमित नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक, पारिवारिक और जीवन शैली की गर्माहट में भी निहित है।

इस व्यापक संदर्भ में केंद्रीय बजट 2026-27 को देखा जाना चाहिए। यह बजट केवल घरेलू अर्थव्यवस्था का दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि भारत की Diaspora Diplomacy का आर्थिक आधार भी है। पहली बार इतनी स्पष्टता से यह संदेश दिया गया है कि भारत अपने प्रवासी समुदाय को केवल भावनात्मक सहयोगी नहीं, बल्कि विकास-सहभागी मानता है।

बजट में NRI और विदेशों में रहने वाले भारतीयों को भारतीय कंपनियों में अधिक प्रत्यक्ष हिस्सेदारी की अनुमति देना एक निर्णायक कदम है। व्यक्तिगत निवेश सीमा को 10 प्रतिशत और कुल सीमा को 24 प्रतिशत तक बढ़ाना यह दर्शाता है कि सरकार प्रवासी पूंजी को दीर्घकालिक, स्थिर और भरोसेमंद निवेश के रूप में देख रही है।

NRI पेशेवरों के लिए विदेशी आय पर पाँच वर्षों तक कर-छूट का प्रस्ताव यह संकेत देता है कि भारत अब केवल पूंजी ही नहीं, बल्कि वैश्विक प्रतिभा को भी आकर्षित करना चाहता है। तकनीक, स्वास्थ्य, डेटा एनालिटिक्स, AI और कंसल्टिंग जैसे क्षेत्रों में यह नीति भारत को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की ओर तेज़ी से अग्रसर कर सकती है।

वैश्विक कूटनीति के स्तर पर भी भारत की भूमिका निरंतर सुदृढ़ हो रही है। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी और यूएई के साथ हुए समझौते तथा विशेष रूप से यूरोपीय संघ के साथ प्रस्तावित व्यापक व्यापार समझौता–जिसे 'मदर ऑफ़ ऑल डील्स' कहा जा रहा है–भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केंद्रीय स्तंभ बना सकता है। अमेरिका के साथ रणनीतिक सहयोग और कनाडा के प्रधानमंत्री की प्रस्तावित भारत यात्रा यह पुष्टि करती है कि भारत अब वैश्विक निर्णयों को प्रभावित करने की स्थिति में है।

अंततः, वंदे मातरम् के 150 वर्ष केवल अतीत का स्मरण नहीं हैं, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय चेतना का जीवंत प्रतीक हैं। आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत के भविष्य की दिशा तय करने का मंच है। इस यात्रा में प्रवासी भारतीय केवल दर्शक नहीं, बल्कि सह-निर्माता बनकर उभरे हैं–खेल के मैदान से लेकर बजट की पंक्तियों और कूटनीतिक संवाद तक।

विकसित भारत की नींव में प्रवासी भारतीयों की भागीदारी इस युग की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है–और यही वंदे मातरम् की वैश्विक गूंज है।

पेंशनर्स को बिना मांगे नहीं मिलता उनका हक, इसके बाद भी करेंगे संघर्ष : केके पांडे

आगामी 11 फरवरी के आंदोलन को लेकर विद्युत पेंशनर्स रहे एकजुट : जिलाध्यक्ष डीके तिवारी

बैतूल। पेंशनर बुजुर्गों की समस्या बहुत होती है, उन्हे अपने हक के लिए इस आयु में भोपाल जाकर आंदोलन करना मजबूरी बन गया है। बुजुर्गों के लिए भोपाल जाना आसान नहीं होता। शारीरिक रूप से कई परेशानियां होती हैं। लेकिन क्या करें, अब यह करना पड़ेगा। यह बात वरिष्ठ नागरिक संगठन के सचिव केके पांडे ने विद्युत मंडल पेंशनर्स एसोसिएशन के शनिवार को सागौन बाबा दरबार में हुए कार्यक्रम के दौरान पेंशनर्स से कही। मप्र विद्युत प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष सुंदरलाल कड़वे ने इस दौरान कहा कि पेंशनर्स को बिना आंदोलन किए अपनी मांग उठाने पर भी कुछ नहीं मिलता, उन्हें हमेशा आंदोलन करने पड़ते हैं। हमारी कोई सुनता नही, लेकिन इस बार आगामी 11 फरवरी को हमें एकजुटता से अपनी मांगे लिंक रोड पर एसई कार्यालय पहुंचकर उठाना है। इस अवसर पर मप्र विद्युत मंडल एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डीके तिवारी ने कहा कि 11 फरवरी को हम एक बार फिर लिंक रोड

कैंपिंग हाऊस में दोपहर 12 बजे एकजुट होंगे, जिन लोगों ने अपने आधार कार्ड नहीं दिए हैं, वे जरूर इसके साथ अन्य डॉक्यूमेंट भी लाकर जमा करें। हम सभी संगठित होंगे, तभी हमें हमारे भत्ते और अन्य हक मिलेगा। उन्होंने कहा कि खेद का विषय है कि पेंशनर्स के पक्ष में माननीय उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित किये गये निर्णयों का परिपालन म.प्र. शासन द्वारा नहीं किया जा रहा है। यह एक ओर न्यायालयीन

निर्णय की अवमानना है वही दूसरी ओर पीड़ित पेंशनर्स के साथ न्याय होने के बाद भी उसे न्याय से वंचित कर अन्याय किया जा रहा है।

इस दौरान शहर के प्रसिद्ध डॉ. श्याम सोनी ने भी पेंशनर्स को उपयोगी जानकारी दी। उन्होंने पेंशनर्स को 62 वर्ष से ही प्रधानमंत्री आयुष्मान स्वास्थ्य योजना से लाभान्वित करने एवं स्वास्थ्य बीमा योजना लागू की जाने की बात का जोरदार समर्थन किया। मप्र विद्युत मंडल पेंशनर्स एसोसिएशन के सचिव एमएम अंसारी ने इस दौरान कहा कि 11 फरवरी को एसई कार्यालय बैतूल में पहुंचकर अपनी मांगें पूरी एकजुटता से रखें। उक्त समस्याओं का निराकरण राज्य सरकार द्वारा उचित दिशा निर्देश प्रसारित करने पर ही हो सकेगा। अतः हम हमारे प्रधानमंत्री से ज्ञापन के माध्यम से एवं पत्रद्व के द्वारा निवेदन करते है कि मध्यप्रदेश के पेंशनर्स की ज्वलंत समस्याओं के निराकरण हेतु अपने अधीनस्थ विभाग को तथा मध्यप्रदेश राज्य शासन को समुचित निर्देश देवें।

नारी को सशक्त एवं भारत को विकसित बनाने वाला बजट : डॉ.सुषमा सोनी

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय विजय भवन में आयोजित महिला संवाद को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता नगर की वरिष्ठ महिला चिकित्सक डा. सुषमा सोनी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने जो बजट पेश किया है, वह न केवल आने वाले भविष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, बल्कि यह नई दिशा में देश को अग्रसर करेगा। प्रधानमंत्री मोदी जी ने महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। उन्होने कहा कि महिलाएं जब आत्म निर्भर बनती है तो राष्ट्र विकसित बनता है। बजट में महिला हॉस्टल, कौशल विकास कार्यक्रम और स्व- सहायता समूहों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए गए हैं। इन योजनाओं से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इस बजट में ऐतिहासिक प्रावधान किए गए हैं, जिनसे महिलाएं आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त होंगी। संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि इस बजट से भारत की इकोनॉमी आने वाले समय में दुनिया में सबसे मजबूत और सबसे बेहतर होगी। यह बजट उस संकल्प को दर्शाता है, जिसमें न केवल महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित किया गया है, बल्कि समग्र रूप से देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने के लिए कई दूरगामी कदम उठाए गए हैं। श्री पंवार ने कहा कि 2014 में देश की कमान संभाली, तब भारत 11वें नंबर की इकोनॉमी था। बेरोजगारी और इन्फ्रास्ट्रक्चर के मामले में देश काफी पिछड़ा हुआ था। आज हम 4 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी तक पहुंच गए हैं, जबकि अमेरिका और चीन 18 से 20 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी पर पहुंच चुके हैं।

गृह भाड़ा बजट नहीं होने से प्राथमिक व सहायक शिक्षकों का वेतन रुका

● पुरानी पेंशन बहाली राष्ट्रीय आंदोलन संगठन ने जिला शिक्षा अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

बैतूल। पुरानी पेंशन बदली राष्ट्रीय आंदोलन संगठन द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर प्राथमिक शिक्षक एवं सहायक शिक्षक का माह जनवरी 2026 का वेतन नहीं होने और वर्ष 2013 से कार्यरत संविदा शिक्षकों को प्रथम क्रमोन्नति का लाभ दिलाने की मांग की गई। ज्ञापन में बताया गया कि शिक्षा विभाग में गृह भाड़ा मद की राशि का बजट उपलब्ध नहीं होने के कारण प्राथमिक शिक्षा एवं सहायक शिक्षकों का जनवरी 2026 का वेतन आहरित नहीं हो सका है, जिससे शिक्षकों को आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि वर्ष 2013 से संविदा शिक्षकों को प्राप्त क्रमोन्नति का लाभ अब तक नहीं दिया गया है, जिसे तत्काल प्रभाव से प्रदान किया जाना चाहिए।

सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम से बदल रही बच्चों की सोच और समझः सहायक आयुक्त विवेक पाण्डे

बैतूल। सक्षम जीवन कौशल विकास कार्यक्रम के अंतर्गत ज़िला कार्यालय सहायक आयुक्त के सभागार में एक दिवसीय अनुभव सांझा कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यक्रम के ज़मीनी क्रियान्वयन, नवाचारों और बच्चों में आए संकेतात्मक बदलावों को साझा किया गया।कार्यशाला में सहायक आयुक्त विवेक पाण्डे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि सहायक संचालक सुनील जैन और सक्षम कार्यक्रम से डिविजन मैनेजर गौतम कुमार विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में बीआरसीसी, जन शिक्षक, प्रधान पाठक, प्राचार्य एवं विभिन्न विद्यालयों से आए शिक्षक साथियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सहायक आयुक्त विवेक पाण्डे ने कहा कि सक्षम जीवन कौशल कार्यक्रम बच्चों को शैक्षणिक रूप से एवं व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार करने की दिशा में एक प्रभावी पहल है। उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम गत वर्ष से निरंतर संचालित है और शिक्षकों द्वारा पूरी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ ज़मीनी स्तर पर लागू किया जा रहा है, जिसके सकारात्मक परिणाम अब स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। मेरी सीख की कॉपी, सक्षम वॉल पेंटिंग, बच्चों की नियमित उपस्थिति, बाल कैबिनेट की सक्रिय भूमिका तथा गतिविधि आधारित शिक्षण से बच्चों में नेतृत्व क्षमता, जिम्मेदारी की भावना और जीवन कौशल विकसित हुआ है। कार्यशाला के दौरान सक्षम गैलरी वॉक का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विकास खण्डों द्वारा किए गए नवाचार, गतिविधियों की झलक, बच्चों के कार्य, मेरी सीख की कॉपी एवं सक्षम से संबंधित शैक्षणिक सामग्री का प्रदर्शन किया गया।

महाशिवरात्रि को लेकर नवीन पुलिस थाना में बैठक सम्पन्न, त्योहार शांति से मनाएं : प्रियंका भल्लावी

सुबह सवेरे सोहागपुर।
नवीन पुलिस थाना परिसर में आज आगामी त्योहार महाशिवरात्रि आदि को लेकर अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती लता यशवंत पटेल, एसडीओ पुलिस संजू चौहान, तहसीलदार आर एस झरबड़े,नगर निरीक्षक उषा मरावी आदि मंचासीन थे। इस अवसर पर एसडीएम प्रियंका भल्लावी ने कहा कि महाशिवरात्रि पर्व पर स्थानीय विगुण विभाग, नगरपालिका अधिकारी आदि को निर्देश दिए कि सफाई की अच्छी व्यवस्था की जाए। बिजली का व्यवधान उत्पन्न न हो। आपने नगरवासियों से आव्हान किया कि महाशिवरात्रि पर्व एवं अन्य त्यौहार शांतिपूर्ण ढंग से मनाएं। आपने पुलिस को कानून व्यवस्था बनाए रखने की बात कही।इस अवसर पर वकील प्रांजल तिवारी ने कहा कि महाशिवरात्रि पर्व को पांच दिवसीय मेला किया जाए। ज्ञातव्य है अभी तक महाशिवरात्रि पर्व तीन दिवसीय मेला होता है। उल्लेखनीय है कि शिव मंदिर में शिव-पार्वती की दुर्लभ पाषाण प्रतिमा स्थापित है।जिसके महाशिवरात्रि पर्व पर दूर दूर के ग्रामों के ग्रामीण भी आते हैं। इस अवसर पर पंडित प्रकाश मुद्गल, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, कन्नू लाल अग्रवाल, पूर्व पार्षद लक्ष्मीनारायण सोनी,वरिष्ठ वकील जयप्रकाश माहेश्वरी, कृष्णा पालीवाल नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल,आकाश पटेल, गजेन्द्र चौधरी, संतोष, राकेश चौधरी,मोहन कहार,वकील प्रांजल तिवारी, अखिलेश मालवीय आरिफ खान,अभिनव पालीवाल राकेश चौरसिया आदि उपस्थित थे।

कलाव्योम फाउंडेशन द्वारा क्षिप्रा नदी घाट, क्षिप्रा पर गूंजे लोक गीत

पद्मश्री कालूराम बामनिया ने दी कबीर लोक गीतों की प्रस्तुति

देवास। पुण्य सलिला क्षिप्रा नदी के पावन तट, क्षिप्रा पर कलाव्योम फाउंडेशन द्वारा आयोजित लोक गायन प्रस्तुति कार्यक्रम में लोक संगीत की मधुर स्वर-लहरियों ने संपूर्ण वातावरण को भक्तिरस, अध्यात्म और सांस्कृतिक चेतना से सराबोर कर दिया। क्षिप्रा नदी घाट, क्षिप्रा पर आयोजित इस सांस्कृतिक संध्या में बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी और स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे, जो लोक गायन की प्रस्तुति सुनकर मंत्रमुग्ध हो गए।

कार्यक्रम में पद्मश्री सम्मानित लोकगायक कालूराम बामनिया ने संत कबीर के अमर पदों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। उनकी सशक्त और आत्मिक गायन शैली ने श्रोताओं को लोक परंपरा की गहराइयों से जोड़ दिया। 'मन लाग्यों मेरो यार फकीरी में', 'मन मस्त हुआ रे क्या बोले', 'चदरिया झिनी रे झिनी' जैसे कबीर पदों की प्रस्तुति पर श्रोता झूम उठे और पूरा घाट कबीर वाणी से गूंज उठा। इन गीतों के माध्यम से संत कबीर के वैराग्य, मानवता, सत्य और आत्मबोध के संदेश श्रोताओं तक प्रभावी रूप से पहुंचे।

लोक गायन की इस प्रस्तुति ने न केवल सांस्कृतिक आनंद प्रदान किया, बल्कि भारतीय लोक परंपरा की समृद्ध विरासत को सहेजने का संदेश भी दिया। कार्यक्रम के दौरान क्षिप्रा नदी के पवित्र स्वरूप और उसके सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया गया। आयोजकों ने बताया कि इस तरह के आयोजन समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं।

कलाव्योम फाउंडेशन के अध्यक्ष अशोक

श्रीमाल ने अपने संबोधन में कहा कि क्षिप्रा नदी केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान है। इसके संरक्षण और स्वच्छता के प्रति जनजागरूकता फैलाना समय की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए कलाव्योम फाउंडेशन द्वारा क्षिप्रा नदी संरक्षण के संदेश के साथ हर माह सांस्कृतिक आयोजन किए जाएंगे, ताकि कला, संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ जोड़ा जा सके।

वहीं फाउंडेशन की सचिव अपर्णा भोसले ने कहा कि लोक संगीत हमारी सांस्कृतिक आत्मा है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी को लोक कला से जोड़ना और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना कलाव्योम का प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि भविष्य में लोक गायन, नृत्य, नाट्य और साहित्य से जुड़े विविध कार्यक्रमों का आयोजन क्षिप्रा तट पर किया जाएगा।

कार्यक्रम के दौरान घाट पर उपस्थित श्रोताओं ने लोक गायन की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन मानसिक शांति प्रदान करते हैं और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। कई श्रोताओं ने कबीर पदों की प्रस्तुति को भाव-विभोर कर देने वाला बताया।

समापन अवसर पर कलाकारों का सम्मान किया गया और क्षिप्रा नदी को स्वच्छ व संरक्षित रखने का सामूहिक संकल्प लिया गया। लोक संस्कृति और नदी संरक्षण के इस अनूठे संगम ने कार्यक्रम को विशेष बना दिया।

कलाव्योम फाउंडेशन का यह प्रयास निश्चित ही लोक कला के संरक्षण के साथ-साथ क्षिप्रा नदी के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

पुलिस ने चाकू बाजी के मुख्य आरोपी विधि विवादित बालक व उसके भाई को किया गिरफ्तार

बैतूल। कोतवाली पुलिस ने चाकू बाजी के मुख्य आरोपी विधि विवादित बालक व उसके भाई को गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 6 फरवरी को फरियादी घायल शेख ईमरान पिता शेख मोहम्मद इकबाल (40) नि. तिलक वार्ड टिकारी ने थाना कोतवाली बैतूल ने रिपोर्ट किया कि दोपहर करीबन 3 बजे लक्ष्मी चौक पर पप्पू के पान ठेला पर खड़ा था, वहां पर सईद बाबा ने मुझसे दारु पीने के लिए पैसे मांगे तो मैंने पैसे देने से मना कर दिया। सईद बाबा मुझसे गाली गुफ्तार करने लगा। मै वहां से घर जाने के लिए निकल गया। करीबन 3.30 बजे तिलक वार्ड नम्मू किराना दुकान के पास पहुंचा था कि सईद बाबा उसके लडके अनस और रूबेल के साथ आया और मुझे सामने से रोककर बोला आज इसे खतम कर दो और सईद बाबा व उसके छोटे लडके रूबेल ने मुझे पकडा तथा अनस ने मुझे पेट में चाकू मारा और तीनों वहां से भाग गए। सईद बाबा और उसके दोनों लडके अनस व रूबेल ने जान से खत्म करने के नियत से मुझ पर चाकू से पेट पर हमला किये है। पुलिस ने रिपोर्ट पर धारा 109(1),126(2),3(5) बीएनएस का मामला दर्ज किया। प्रकरण की विवेचना के दौरान विधि विवादित मुख्य बालक एवं विधि विवादित मुख्य बालक का भाई विधि विवादित को गिरफ्तार किया और उनके कब्जे से एक लोहे का धारदार छुरा बरामद कर न्यायालय पेश किया गया है । उक्त कार्यवाही में निरीक्षक देवकरण डेहरिया, उनि बसंत अहके, प्र.आर. दीपक कटियार, आर. उज्जवल दुबे, आर. अनिल बेलवंशी, की सराहनीय रही है।

आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी में किया जा रहा गर्भसंस्कार कार्यक्रम

बैतूल। जिला आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी में गर्भवती महिलाओं के लिए प्रति मंगलवार एवं शुक्रवार नियमित रूप से गर्भसंस्कार कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अंतर्गत आयुर्वेद चिकित्सकों द्वारा गर्भवती महिलाओं को संतुलित आहार-विहार, योग, प्राणायाम, ध्यान, संगीत चिकित्सा तथा सकारात्मक जीवनशैली के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। साथ ही गर्भावस्था के दौरान होने वाली सामान्य समस्याओं के आयुर्वेदिक समाधान भी बताए जाते हैं, ताकि माताएं गर्भकाल को स्वस्थ और संतुलित ढंग से पूरा कर सकें। जिला आयुष अधिकारी डॉ.योगेश चौकीकर ने बताया कि गर्भ संस्कार कार्यक्रम से गर्भस्थ शिशु के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहायता मिलती है। इससे मां के तनाव, चिंता एवं अवसाद में कमी आती है तथा प्रसव पीड़ा को सहन करने की क्षमता में वृद्धि होती है। कार्यक्रम शिशु के संस्कार, स्मरण शक्ति एवं बुद्धि विकास में सहयोग प्रदान करता है। इसके साथ ही मां और शिशु दोनों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है तथा सकारात्मक सोच एवं भावनात्मक संतुलन का विकास होता है।

इन्टरसिटी एक्सप्रेस स्टापेज : सोहागपुर के नागरिकों के ज़ख्मों पर नमक छिड़कना साबित, साहब सोहागपुर स्टेशन को बंद कर दें

हीरालाल गोलानी सोहागपुर ।

भाजपा के पूर्व पार्षद दीपक साहू द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर क्षेत्रीय सांसद दर्शन सिंह चौधरी एवं रेल्वे मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ फोटो के साथ प्रकाशित खबर बोहानी में रुकेगी इन्टरसिटी एक्सप्रेस को डालने से प्राचीन समय से विख्यात कहावत पढ़े न लिखें सोहागपुर रहते हैं के प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा सोशल मीडिया पर तीखे कटाक्ष किए जा रहे हैं। वकील शिवकुमार पटेल ने अब तक किए प्रयासों की दर्जनों कटिंग सोशल मीडिया पर डाली हैं। हमारे प्रयास में कोई कमी नहीं है। जिनके सांसद जी से अच्छे संबंध हैं। प्रयास करना चाहिए।सभी साथ हैं।

टिकिट की बिक्री से कोई लेना देना नही होता,सांसद जब चाहे जहा चाहे तीन रुकवा सकते हैं।विधानसभा चुनाव के पहले बनखेड़ी में राजकोट का ठहराव स्वीकृत हो गया था।परंतु क्षेत्रीय सांसद राव उदयप्रताप सिंह को गाडरवारा से चुनाव लड़ना था।तो उन्होंने बनखेड़ी की जगह सालीचौका में राजकोट का ठहराव करा दिया।अब सोचिए सालीचौका में टिकिट अधिक बिकती या बनखेड़ी में नेताओं के ऊपर निर्भर करता है। कहां ट्रेन रुकेगी कहां नहीं रुकेगी।कांग्रेस के नीरज चोधरी लिखते हैं जिस सांसद को हजारों वोट की लीड हमारे क्षेत्र से मिली। शिवकुमार भाई के नेतृत्व में कई बार प्रतिनिधिमंडल मिला अगर सासंद जी हमारी बात नहीं सुनते तो क्षेत्र की जनता और नेताओं को उनके कार्यक्रम का बहिष्कार करना चाहिए। अगर कर सके तो नहीं तो करते रहो अनुरोध कभी तो सुनेंगे।

कांग्रेस के गजेन्द्र चौधरी श्रेय की लड़ाई में पूरी नहीं हो रही ट्रेनों के ठहराव एवं अन्य सुविधाओं की

मांग।

यूं तो कोई कितने भी प्रयास कर ले, किन्तु विकास कार्यों, क्षेत्र की मांगों के अनुरूप सुविधाओं को उपलब्ध कराने का श्रेय नैतिक रूप से क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों को ही जाता है, और जाना भी चाहिए। लेकिन इसका श्रेय लूटने वालों की कमी क्षेत्र में नहीं है। तो निश्चित रूप से कहीं ना कहीं जन प्रतिनिधि श्रेय की लड़ाई वाले मामलों में अपना एक कदम पीछे खींच लेते हैं। यह कदम पीछे लेना उस समय और मजबूत निर्णय हो जाता है जब जन प्रतिनिधियों के अकेले में कान फूंकने वालों की संख्या बहुतायात में हो। उदाहरणार्थ एक गुट के लोग कहते हैं कि भैया ट्रेन रुकनी चाहिए और दूसरे गुट के लोग पीछे से अकेले में जाकर कह देते हैं कि भैया उनके कहने पर ट्रेन नहीं रुकनी चाहिए। कमी कहां है? और उक्त कमी को कैसे पूरा किया जा सकता है? उक्त विषय पर गंभीरता से चिंतन मनन करने की आवश्यकता है। क्योंकि श्रेय की लड़ाई के कारण ही सोहागपुर ट्रेनों के स्टॉपेज सहित अन्य सुविधाओं से वंचित है। सवाल यह है कि जब इंटरसिटी का स्टॉपेज बोहनी रेलवे स्टेशन पर हो सकता है तो सोहागपुर में क्यों नहीं? यदि कमर्शियल इशू की बात आती है तो वह सोहागपुर के साथ-साथ वह बोहानी पर भी लागू होना चाहिए। श्रेय लेनी की बात पर गजेन्द्र चौधरी का समर्थन वरिष्ठ डॉ. सोमेश सिटौके ने किया है बात में दम है।

चौधरीजी प्रशांत जायसवाल ने इसी बात पर हां में हां मिलाई है। राकेश चौधरी कहते हैं कि बोहानी में किरार समाज के नागरिक रहते हैं। सब भी जगह जातिवाद है।

साहब बंद कर दो सोहागपुर स्टेशन

शरद चौरसिया ने लिखा है हमें समझाया गया कि यहां टिकिट की बिक्री नहीं होती इस कारण बड़ी ट्रेनों का स्टॉपेज नहीं होते...अब ये नया ड्रामा 'ग्रेड' का जबकि ट्रेन स्टॉपेज की मांग सोहागपुर की पहले से है...पर सोहागपुर के प्रति बेरूखी समझ से परे है.. न अमृत स्टेशन.. न ट्रेन का स्टॉपेज..साहब बंद कर दो सोहागपुर रेलवे स्टेशन। आजादी से लेकर अभी तक सोहागपुर रेल्वे स्टेशन एवं क्षेत्र के नागरिक सुविधाओं के लिए तरह रहे हैं। ज्ञातव्य है कि सन् 80 के दशक में जब केन्द्र में कांग्रेस शान था तब सोहागपुर रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म पर धूप, गर्मी तथा बरसाती पानी से बचने का शेड नहीं था। उस समय के जुझारू विपक्ष के नेता एवं वरिष्ठ पार्षद स्वर्गीय लक्ष्मणदास गोलानी के नेतृत्व में स्वर्गीय बाबूलाल बारोड, स्वर्गीय रवीन्द्रसिंह चंदेल, स्वर्गीय मुक्दीलाल मालवीय, गुलाबचंद खंडेलवाल, स्वर्गीयफूलचंद कहार उर्फ लड़ाइयां, स्वर्गीय गणेश सोनी,स्वर्गीय गणेश सराठे, स्वर्गीय कैलाश अहिरवार, एक जीवित बालपुरी गोस्वामी आदि ने आन्दोलन करके कांग्रेस शासन में प्लेटफार्म नंबर दो पर शेड रेल्वे प्रशासन ने बनाया था। जिसमें आज यात्रीगण सुविधा उठा रहे हैं। आन्दोलन के दिन ही रूकी थी ट्रेन वहीं अमरकंटक एक्सप्रेस ट्रेन रोकने के आन्दोलन जिसके अग्रणी स्वर्गीय मेरे सहयोगी रहे पत्रकार नरेश पवार थे। इस आन्दोलन को आज की युवा पीढ़ी को याद ही नहीं होगा।कि रेल रोकने के आन्दोलन में स्टेशन पर पुलिस को गोलियां चलानी पड़ी थी। पक्ष विपक्ष के आन्दोलन में पुलिस आन्दोलनकारियों को गैस एजेंसी से आगे तक दोड़ा कर पीटा था। रेल्वे प्रशासन ने तत्काल अमरकंटक एक्सप्रेस ट्रेन रोकने के आदेश दे दिए थे।जिसमें कई नागरिक घायल हुए थे। तीन दिन तक बाजार बंद रहा था। प्रशासन ने मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए थे। लेकिन वर्तमान में सामूहिक चिन्तन, सामूहिक आन्दोलन की कमी सोहागपुर के वाशिंदों को खल रही है।

लंबे समय से भारतीय सिनेमा से दूर रहीं प्रियंका अब एसएस राजामौली की फिल्म वाराणसी के साथ छह साल बाद शानदार वापसी करने जा रही हैं। इस बीच उनकी वापसी को लेकर चर्चाएं और तेज हो गई। क्योंकि, खबरें हैं कि वह 'डॉन 3' और 'कृष 4' जैसी बड़ी फ्रेंचाइजी फिल्मों में भी नजर आ सकती हैं। फिलहाल प्रियंका चोपड़ा की पूरी फोकस फिल्म वाराणसी पर है। इस फिल्म में उनके साथ महेश बाबू लीड रोल में नजर आएंगे। हाल ही में फिल्म का फर्स्ट लुक रिलीज किया गया जिसमें महेश बाबू रुद्र के अवतार में दिखे।

प्रियंका छह साल बाद वापस लौट रही

सोनम लववंशी

बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक अपनी पहचान बना चुकीं प्रियंका चोपड़ा एक बार फिर भारतीय सिनेमा के केंद्र में लौट रही हैं। लेकिन, इस बार उनकी वापसी सिर्फ एक फिल्म या एक फ्रेंचाइजी की नहीं, बल्कि तीन बड़े ब्रांड्स वाराणसी, डॉन और कृष के बीच एक त्रिकोण की तरह दिख रही है। 6 साल बाद भारतीय सिनेमा में वापसी कर रहीं प्रियंका ने अब उन दो ऐसी फ्रेंचाइजी को भी छेड़ दिया, जिनके साथ उनका नाम दर्शकों के दिल-दिमाग में अलग ही तरह से जुड़ा है डॉन और कृष।

प्रियंका चोपड़ा की भारतीय सिनेमा में आधिकारिक वापसी एसएस राजामौली की भव्य फिल्म 'वाराणसी' से हो रही, जो तेलुगू में बन रही है लेकिन पूरे भारत में बड़े पैमाने पर रिलीज की जाएगी। फिल्म में वे महेश बाबू के साथ लीड रोल में नजर आएंगी, जबकि पृथ्वीराज सुकुमारन एक अहम विलेन के रूप में दिखेंगे। राजामौली ने इस फिल्म को एक 'महाकाव्य : आध्यात्मिक एडवेंचर' बताया है, जिसकी कहानी हजारों सालों के इतिहास, पौराणिक तत्वों और आधुनिक युग के बीच घूमती है। फिल्म का फर्स्ट लुक जारी होने के बाद महेश बाबू को रुद्र के अवतार में दिखाया गया। त्रिशूल हाथ में, बैल पर सवारी जिसने दर्शकों में भक्ति, रहस्य और एक्शन तीनों का मिश्रण पैदा कर दिया है।

प्रियंका का किरदार इस फिल्म में मंदाकिनी नाम से जुड़ा है, जो शायद आध्यात्मिक और रहस्यमयी शक्ति से सम्बद्ध है। जबकि, पृथ्वीराज सुकुमारन कुंभा नाम के प्रमुख विलेन के रूप में दिखेंगे। राजामौली ने साफ कहा कि फिल्म की एक सीक्वेंस को रामायण से प्रेरणा लेकर बनाया गया, जिससे इसे भारतीय पौराणिक दुनिया से जोड़ा जा रहा है। वाराणसी का बजट भी चर्चा में है। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक यह लगभग 1300 करोड़ रुपए का प्रोजेक्ट है, जिसके बारे में प्रियंका ने एक टीवी शो में मजाकिया अंदाज में भी इशारा किया था। इस फिल्म पर फिलहाल प्रियंका का पूरा फोकस है, क्योंकि यह उनकी भारत में लगभग छह साल बाद की पहली बड़ी सिनेमाई उपस्थिति है।

अगर वाराणसी को उनकी भारतीय सिनेमा में वापसी का आधिकारिक पोर्टल कहा गया, तो 'डॉन-3' उनके लिए एक नॉस्टैल्जिक, कमर्शियल ट्रिगर बन सकती है। प्रियंका चोपड़ा इस फ्रेंचाइजी में डॉन (2006) और डॉन 2 (2013) में शाहरुख खान के साथ नजर आ चुकी हैं, और उनका किरदार रोमी दर्शकों को काफी पसंद आया था। डॉन 3 की घोषणा के बाद शुरू में रणवीर सिंह को लीड रोल में लेकर खबरें आई थीं। जबकि, कियारा आडवाणी के नाम की भी चर्चा हुई थी। हालांकि बाद में रणवीर सिंह ने फिल्म से दूरी बना ली और प्रोजेक्ट कुछ समय के लिए ठंडे बस्ते में चला गया। अब नई रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म की शूटिंग जनवरी 2026 से शुरू हो सकती है और रिलीज का लक्ष्य दिसंबर 2026 रखा गया है।

इस बीच एक सोर्स ने बताया कि प्रोड्यूसर प्रियंका चोपड़ा को फ्रेंचाइजी में वापस लाने की संभावना पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। प्रियंका ने हाल ही में एक

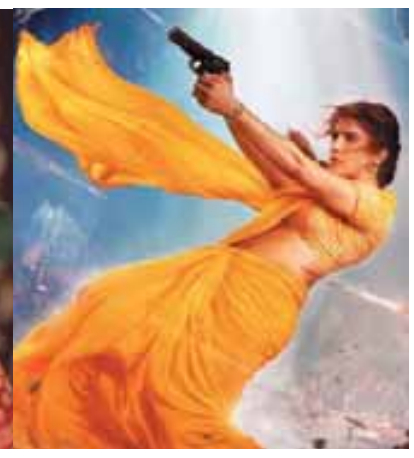

इंटरव्यू में 'डॉन 3' और 'कृष 4' को लेकर सीधे सवाल पर कहा कि मुझे नहीं पता कि मैं इन फिल्मों को लेकर कुछ कह सकती हूं या नहीं! जिस पर महेश बाबू ने मजाक में कहा तो इसका मतलब कुछ तो चल रहा है। इस बात ने सोशल मीडिया पर फिर से अटकलों का दौर शुरू कर दिया है कि क्या प्रियंका 'डॉन 3' में एक बड़े कैमियो या फिर फुल फ्लेड किरदार में वापसी करेंगी।

अगर डॉन फ्रेंचाइजी प्रियंका के लिए स्टाइलिश गैंगस्टर इमेज से जुड़ी है, तो कृष फ्रेंचाइजी उनके लिए सुपरहीरो रोमांस की दुनिया है। प्रियंका ने कृष (2006), कृष 2 (2013) और कृष 3 (2013) में ऋतिक रोशन के साथ काम किया है। दोनों की केमिस्ट्री दर्शकों के बीच काफी पसंद की गई। अब खबरें हैं कि कृष 4 इस बार एक नए फॉर्मेट में आएगी। ऋतिक रोशन इस फिल्म को डायरेक्ट करने वाले हैं, जो उनका निर्देशन का डेब्यू होगा। इससे पहले तक 'कृष' सीरीज का निर्देशन राकेश रोशन करते आए थे। सूत्रों के मुताबिक, प्रियंका चोपड़ा को कृष 4 की लीड हीरोइन के रूप में फाइनल कर लिया गया है, जो उनकी बॉलीवुड में वापसी का एक बड़ा बिंदु बन सकता है।

रिपोर्ट्स में यह भी कहा जा रहा है कि उनका डील लगभग 30 करोड़ रुपये के आसपास है, जो उनकी बैक-टू-बैक इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स को देखते हुए एक स्वाभाविक आंकड़ा माना जा रहा है। कहानी के बारे में अभी ज्यादा जानकारी गोपनीय रखी गई, लेकिन कुछ रिपोर्ट्स में टाइम ट्रैवल और मल्टी-टाइमलाइन की चर्चा की गई है, जो फ्रेंचाइजी को एक नया डायमेंशन दे सकती है। इसी के साथ प्रीति जिंटा और रेखा जैसी एक्ट्रेसेस के भी फिर से जुड़ने की अटकलें लगाई जा रही, जिससे 'कृष 4' को एक पूरी पीढ़ी का रीयूनियन-प्रोजेक्ट बनाने की कोशिश दिखती है।

प्रियंका चोपड़ा ने हॉलीवुड और इंटरनेशनल टीवी प्रोजेक्ट्स में खुद को एक ग्लोबल ब्रांड के रूप में स्थापित किया है। लेकिन, अब वह भारतीय दर्शकों के लिए एक अलग तरह की वापसी की तैयारी कर रही हैं। 'वाराणसी' उन्हें पौराणिक, माइथोलॉजिकल इमेज देगी तो 'डॉन 3' उन्हें स्टाइलिश गैंगस्टर लुक के साथ जोड़ सकती है। 'कृष 4' उन्हें सुपरहीरो, रोमांटिक दुनिया में वापस ला सकती है। इस तरह प्रियंका अपने करियर के तीन अलग-अलग पहलुओं को एक साथ एक्टिव कर रही हैं। राजामौली के साथ महाकाव्य, पौराणिक इमेज,डॉन फ्रेंचाइजी के साथ बॉलीवुड क्लासिक नॉस्टैल्जिया,और 'कृष 4' के साथ युवा दर्शकों के बीच सुपरहीरो रोमांस।

इसी के साथ वह यह भी साबित करने की कोशिश कर रही हैं कि वह सिर्फ एक इंटरनेशनल स्टार नहीं, बल्कि अभी भी भारतीय सिनेमा के लिए एक वैल्यूएबल लीड एक्ट्रेस बनी हुई हैं। फिलहाल प्रियंका चोपड़ा की पूरी एनर्जी 'वाराणसी' पर फोकस्ड है, जो 2027 के आसपास रिलीज होने की संभावना है।

'डॉन 3' और 'कृष 4' के लिए अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई, लेकिन सूत्रों के मुताबिक दोनों प्रोजेक्ट्स प्री-प्रोडक्शन या फाइनल टेबल रीडिंग के फेज में हैं। सोशल मीडिया पर फैंस पहले से ही 'प्रियंका डॉन वापसी' और प्रियंका-ऋतिक की 'कृष 4' केमिस्ट्री की अपेक्षा में हैं। अगर ये तीनों प्रोजेक्ट्स एक ही टाइमलाइन में रिलीज हो जाते हैं, तो 2026-27 प्रियंका चोपड़ा के लिए भारतीय सिनेमा में सबसे बड़ा कमबैक फेज साबित हो सकता है। अब देखना दिलचस्प होगा कि प्रियंका चोपड़ा 'डॉन 3' और 'कृष 4' को लेकर कब और किस तरह आधिकारिक ऐलान करती हैं। लेकिन, अभी की चर्चाएं ही यह साफ कर रही हैं कि उनकी वापसी सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि एक पूरी फ्रेंचाइजी, रीवाइवल स्ट्रैटेजी का हिस्सा बनने वाली है।

रियल बॉक्स

अंधेरे में उजाले की झलक के 21 साल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

जब बात हिंदी सिनेमा की कल्ट क्लासिक की हो, तो संजय लीला भंसाली की 'ब्लैक' का नाम सबसे ऊपर आता है। 4 फरवरी 2005 को रिलीज हुई यह फिल्म अपने 21 साल पूरे कर चुकी है। कमर्शियल सफलता से ज्यादा, इसने भावनात्मक गहराई और सामाजिक संदेशों से दर्शकों के दिलों में जगह बनाई। अमिताभ बच्चन और रानी मुखर्जी की जोड़ी ने अंधेपन और बहरापन जैसी चुनौतियों को इतनी से बखूबी उतारा कि फिल्म आज भी प्रासंगिक लगती है। लेकिन, इसके पीछे की कहानियां उतनी ही प्रेरणादायक हैं जितनी फिल्म खुद। अमिताभ बच्चन ने अपने ब्लॉग में खुलासा किया था कि उन्होंने 'ब्लैक' के लिए एक रुपया भी नहीं लिया। संजय लीला भंसाली की पिछली फिल्मों 'हम दिल दे चुके सनम' और 'देवदास' से प्रभावित होकर वे उनके साथ काम करना चाहते थे। जब भंसाली उनके पास आए, तो अमिताभ बच्चन ने तुरंत हामी भर ली, कहा कि फिल्म का हिस्सा बनना ही मेरी फीस है। यह फैसला फिल्म के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। नतीजा यह हुआ बच्चन साहब को फिल्मफेयर बेस्ट एक्टर अवॉर्ड मिला, साथ ही उसी साल राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी। लेकिन यह अवॉर्ड्स ही सब कुछ नहीं थे। 'ब्लैक' ने 51वें फिल्मफेयर में कुल 6 अवॉर्ड्स झटके, जिनमें बेस्ट फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर (भंसाली को) और बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस (ऐश्वर्या राय को) शामिल थे।

फिल्म के कथानक से यह स्पष्ट भी हुआ कि रानी मुखर्जी के किरदार को बहुत खास तरीके से लिखा गया था। फिल्म की शूटिंग के दौरान एक हादसा भी हुआ था, जिसने पूरी टीम को हिला दिया। यह हादसा मुंबई के फिल्म सिटी में हुआ, जहां सेट 80 प्रतिशत तबाह हो गया था। अमिताभ के ब्लॉग के मुताबिक, सेट पर आग लग गई और सब कुछ जलकर राख हो गया। किस्मत से किसी को गंभीर चोट नहीं आई। खबर मिलते ही वे और रानी मुखर्जी भंसाली के घर पहुंचे। उस वक्त भंसाली टूट चुके थे, लेकिन दोनों सितारों ने कहा कि फिक्र न करें, सभी सीन दोबारा शूट करेंगे। इस इमोशनल सपोर्ट ने भंसाली को फिर से उठ खड़ा किया। भंसाली ने इसे 'फिल्म का परीक्षण' बताया और दोबारा सेट बनवाया और शूटिंग की। इस वजह से शूटिंग शेड्यूल 90 दिन ज्यादा बढ़ गया था। लेकिन, फिल्म के किसी सीन से कोई समझौता नहीं किया गया।

कमर्शियल नजरिए से देखा जाए, तो 'ब्लैक' 23 करोड़ के बजट में बनी थी, इसके मुकाबले फिल्म ने 23.18 करोड़ की कमाई की। 2005 की टॉप फिल्मों में 14वें स्थान पर रही। उस साल नंबर 1 पर सलमान खान-अनिल कपूर की 'नो एंट्री', दूसरे पर अभिषेक बच्चन-ऐश्वर्या राय की 'बंटी और बबली' और तीसरे पर अक्षय कुमार की 'गरम मसाला' रही थी। लेकिन, आलोचकों ने 'ब्लैक' को सराहा। टाइम्स ऑफ इंडिया ने इसे 4/5 स्टार दिए और लिखा कि एक फिल्म जो सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि सोचने पर मजबूर करती है। रेडिफ ने इसे 'भंसाली का सबसे परिपक्व काम' कहा। आज भी आईएमबीडी पर 8.0/10 रेटिंग के साथ यह भंसाली की सबसे ऊंची रैंकिंग वाली फिल्म है। इस फिल्म से रणवीर कपूर का भी खास कनेक्शन रहा। वे असिस्टेंट डायरेक्टर थे और चाइल्ड आर्टिस्ट आयशा कपूर (छोटी रानी) को ट्रेनिंग देते थे। रणवीर ने बाद में बताया कि ओपनिंग सीन में टेबल पर बैठा शख्स बच्चन साहब नहीं, बल्कि वे खुद थे। चेहरा न दिखना था, सिर्फ परछाई चाहिए थी और बच्चन साहब उपलब्ध न होने पर रणवीर ने शॉट कवर किया। यह किस्सा रनबीर की पहली बड़ी जिम्मेदारी को दर्शाता है। रनबीर ने 'ब्लैक' से ही भंसाली का स्टाइल सीखा, जो बाद में उनकी 'राजनीति' जैसी फिल्मों में झलका।

'ब्लैक' का मूल विचार भंसाली को 'खामोशीः द म्यूजिकल' (1996) के दौरान आया। उस फिल्म की शूटिंग में वे फिजिकली चैलेंज्ड बच्चों से मिले। इससे प्रेरित होकर 'ब्लैक' बनी, जो हेलन केलर की जिंदगी पर आधारित है। हेलन केलर की आत्मकथा 'द स्टोरी ऑफ माय लाइफ' और उनके अध्यापक ऐनी सुलिवन से सीधा प्रभाव पड़ा। भंसाली ने इसे भारतीय

संदर्भ में ढाला। लेकिन 'खामोशी' की फ्लॉप होने से प्रोजेक्ट रुका। 'हम दिल दे चुके सनम' (1999, 80 करोड़ कमाई) और 'देवदास' (2002, 100 करोड़) की सफलता के बाद ही 'ब्लैक' पर काम तेज हुआ। फिल्म को लेकर रिसर्च के लिए भंसाली ने 2003 में कोलकाता के एक स्कूल में जाकर अंधे-बहरे बच्चों से महीनों बात की और स्क्रिप्ट तैयार की। लेकिन, फिल्म में कास्टिंग ड्रामा भी कम नहीं था। करीना कपूर ने रानी के रोल के लिए मना कर दिया। वजह यह कि करिश्मा-अभिषेक की सगाई टूटने से बच्चन-कपूर परिवारों में खटास आ गई थी।

करीना ने भंसाली से साफ कहा कि बच्चन साहब के साथ नहीं। शुरू में रानी मुखर्जी ने भी इंकार किया, सोचा किरदार मुश्किल है। लेकिन, भंसाली ने उन्हें वर्कशॉप में 6 महीने ट्रेनिंग दी। रानी ने बहरापन सीखने के लिए साइन लैंग्वेज एक्सपर्ट्स से काम किया। ऐश्वर्या राय को छोटे रोल के लिए मनाना पड़ा, लेकिन उन्होंने इसे करियर का टर्निंग पॉइंट बताया। चाइल्ड आर्टिस्ट आयशा कपूर ने असल जिंदगी में भी सुनने-संबंधी समस्या थी, जिसे भंसाली ने फिल्म में इस्तेमाल किया। तकनीकी रूप से 'ब्लैक' ने मिसाल कायम की। भंसाली ने पहली बार डिजिटल साउंड मिक्सिंग का इस्तेमाल किया। फिल्म का बैकग्राउंड स्कोर मोंटी शर्मा ने दिया, जिसमें 'बन्नो रानी' गाना आज भी हिट है। सिनेमेटोग्राफर विक्रांत भोंडालेकर ने लो-लाइट शॉट्स से अंधेपन को रियल बनाया।

यह फिल्म मुख्यधारा के बॉलीवुड से अलग है, जिसमें गानों और डांस के बजाय बैकग्राउंड म्यूजिक और भावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह एक अंधी और बहरी लड़की के अंधेरे जीवन में रोशनी लाने और उसके शिक्षक के अल्जाइमर से जूझने की कहानी है, जो दिल को गहराई से छूती है। भंसाली ने अपनी भव्यता को एक गंभीर विषय के साथ जोड़ा। फिल्म में मोनोक्रोमैटिक रंगों का बेहतरीन इस्तेमाल किया गया, जो किरदारों की भावनाओं को उजागर करता है। साल 2005 में टाइम यूरोप की 10 बेस्ट फिल्मों की प्रतिष्ठित सूची में 'ब्लैक' पांचवें स्थान पर थी, जो फिल्म के विषय की सार्वभौमिकता का एक प्रमाण है। कैसे संजय लीला भंसाली की दृष्टि दुनियाभर के दर्शकों के साथ जुड़ने में कामयाब रही। ये उपलब्धि ग्लोबर सिनेमा पर बॉलीवुड के प्रभाव का प्रमाण थी! फिल्म को लेकर अमिताभ ने अपने ब्लॉग में लिखा था कि फिल्म के प्रीमियर के दिन जब हम फिल्म देख रहे तो सबसे आंखों में खुशी के आंसू थे। हैरान कर देने वाली बात यह थी कि दर्शकों में दिलीप कुमार भी बैठे थे और यह मेरे बचपन का सपना सच होने जैसा था। जब फिल्म खत्म हो गई, तो वे हॉल के बाहर मुझे खड़े मिले, मेरा हाथ पकड़ लिया और मेरी आंखों में देखा। यह मेरी जिंदगी में हमेशा साथ रहने वाला पल था।

यह फिल्म भारतीय सिनेमा में दिव्यांग किरदारों को मुख्यधारा में लाने वाली पहली बड़ी कोशिशों में से एक है। फिल्म ने दिव्यांग जागरूकता बढ़ाई और रिलीज के बाद कई एनजीओ ने इसे स्क्रीनिंग के लिए इस्तेमाल किया। दुनिया भर में 'ब्लैक' का असर पड़ा। आमतौर पर बॉलीवुड रीमेक बनाता है, लेकिन 2013 में तुर्की के डायरेक्टर उगर युसल ने इसे 'बेनिम दुनयाम' (मेरी दुनिया) के नाम से रीमेक किया। यह तुर्की में सुपरहिट रही, लेकिन कॉपीराइट विवाद हुआ। भंसाली ने बाद में सहमति दी। कोरिया और स्पेन में भी अनौपचारिक रूप से प्रभाव दिखा। भारत में 'ब्लैक' को 2021 में री-रिलीज किया गया, जहां फिर कमाई हुई। आज 21 साल बाद 'ब्लैक' एक कल्ट क्लासिक है। यह साबित करती है कि सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं, बदलाव का हथियार है। बच्चन साहब का फ्री में काम करना, भंसाली का जुनून, और टीम का समर्पण, सबने इसे अमर बना दिया। यह फिल्म हमें सिखाती है कि अंधेरा कितना भी गहरा हो, 'लाइट' हमेशा मिल जाती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में हमेशा छोटे नहीं होते हैं खोटे

अशोक जोशी

कहने को साल में फरवरी सबसे छोटा महीना होता है। लेकिन, महत्व की दृष्टि से उसका ओहदा दूसरे किसी माह से कम नहीं है। यदि भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा

जाए तो इसी छोटे माह में केंद्रीय बजट जैसी बडी आर्थिक घटना होती है। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो इसी माह से वसंत का आगमन होता है और शिवरात्रि जैसा बड़ा पर्व आता है। इसी छोटे से महिने से दिनों को बड़ा होना दिखाई देने लगता है।

पाश्चात्य दृष्टि से देखा जाए तो इसी माह चार साल में एक बार लीप इयर आता है और प्रेमियों के दिलों में जोश भरने वाला वेलेंटाइन डे भी इसी छोटे से महिने में आता है। यदि हिन्दी सिनेमा के लिहाज से देखा जाए तो वहां भी छोटे शब्द या छोटी घटनाओं को उतना ही महत्व दिया जाता है, जितना कि फरवरी के छोटे से महिने को महत्व मिलता है। क्रिकेट में छोटे कद के सचिन और सुनील गावसकर ने लिटिल मास्टर बनकर बड़े धमाल किए, तो इन दिनों छोटे कद के रिंकू सिंह भी छक्के उड़ाते दिखाई देते हैं। हिंदी फिल्मों में आज के सफल नायक सलमान खान से लेकर आमिर खान और शाहरूख खान का कद ज्यादा बड़ा नहीं है। लेकिन, इनके खाते में बड़ी सफलताएं दर्ज हैं।

यदि और ध्यान से देखा जाए तो फिल्मी दुनिया में छोटे छोटे लोगों और छोटे-छोटे नामों ने ही नहीं छोटी-छोटी फिल्मों ने भी बड़े कारनामे कर दिखाए हैं। छोटी कद वाली जया भादुडी, मौसमी चटर्जी, रानी मुखर्जी और काजोल ने बड़ी सफलताएं अर्जित की। छोटे नाम वाली फिल्मों में पा, मां, एक्स, डी जैसे कम अक्षर वाली फिल्में भी तूफान मचा चुकी हैं। देव आनंद के छोटे भाई विजय आनंद बड़े निर्देशक बने तो बीआर चौपडा के छोटे भाई यश चोपडा ने भी सिने जगत में बड़ा नाम कमाया। लता मंगेशकर की छोटी बहन आशा भौंसले ने एक लम्बी गीतयात्रा तय की। करिश्मा कपूर की छोटी बहन करीना अपनी बहन को पीछे छोड़ चुकी हैं। शोभा खोटे के छोटे भाई का नाम भले ही विजू खोटे रहा, लेकिन हिंदी सिनेमा के लिए वे खरे साबित हुए।

सबसे पहले बात छोटी फिल्मों की यानी कि वे फिल्में जिनकी लम्बाई बारह से चौदह रीलों में सिमट गई। लेकिन, बॉक्स आफिस में इन फिल्मों ने बड़े कीर्तिमान स्थापित किए। इन फिल्मों की लम्बाई भले ही छोटी रही, लेकिन जब ये फिल्में प्रदर्शित हुई तो सिनेमाघर के बाहर लम्बी कतारें देखी गई। हिंदी सिनेमा में छोटी, लेकिन दिलचस्प और रोमांचक फीचर फिल्में बनाने का श्रेय बीआर चोपड़ा को जाता है, जिन्होंने सबसे पहले बिना गाने वाली फिल्म 'कानून' का निर्माण किया था। 1960 में बनी यह फिल्म कोर्ट रूम पर आधारित एक थी, जो कानूनी बारीकियो को इतनी दिलचस्प अंदाज मे पेश करती है कि दर्शक पूरे समय सीट से बंधा रहता है।

इसी बैनर ने 9 साल बाद 1969 राजेश खन्ना और नंदा को लेकर 100 मिनट की सस्पेंस थ्रिलर फिल्म 'इत्तफाक' का निर्माण किया था। इस फिल्म में न तो कोई गाना था और न इंटरवल हुआ। कई शहरों में इस फिल्म को एकदम नए अंदाज में पेश किया था और फिल्म को इंटरवल के बाद दिखाया जाता था। इससे पहले सिनेमाघरों में आने वाली फिल्मों के ढेर सारे ट्रेलर दिखाए जाते थे। जिसके आकर्षण में दर्शकों की कतारे लगी रहती थी। वैसे यह फिल्म भी रोचक और बंधी हुई होने के कारण बॉक्स आफिस पर सफल रही। बीआर फिल्मस ने इसी परम्परा को अपनी एक और थ्रिलर फिल्म 'धुंध' से आगे बढ़ाया था। 1973 बनी यह फिल्म एक मर्डर मिस्ट्री थी, जो एक अंधेरी रात मे एक घर के भीतर रची गई थी। जीनत अमान, डैनी, संजय खान और नवीन निश्चल अभिनीत यह फिल्म भी बेहद सफल रही थी।

इसके बाद 1986 की एक रुका हुआ फैसला, 2012 की तलाश, 2016 की पिंक, 2008 की ए वेडनेसडे भी सफल रही थी। इन छोटी फिल्मों में 'पुष्पक' एक अलग किस्म की रोचक फिल्म थी, जिसमें कोई भी डायलॉग नही थे। कमल हासन अभिनीत इस छोटी सी फिल्म में दर्शकों की बड़ी भीड़ को अपनी प्रस्तुति के आधार पर जमा करने में सफलता पाई थी। हिंदी फिल्मों में न केवल छोटी फिल्मों के कारनामें हैं, बल्कि कई फिल्मों और गीतों में छोटा, छोटी, छोटै और नन्हें जैसे शब्दों का भी जमकर उपयोग किया गया है।

1959 मे बनी बलराज साहनी, नंदा अभिनीत 'छोटी बहन' भी देखने को मिलती है, तो 1971 में राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर अभिनीत 'छोटी बहू' के भी दर्शन होते हैं। 1961 में महमूद छोटे नवाब बनकर आए जिसमें छोटे बर्मन यानी कि राहुल देव बर्मन ने सबसे कम आयु के संगीतकार बनने का कीर्तिमान स्थापित किया था। इसके बाद 1974 में साधना के साथ शम्मी कपूर छोटे सरकार बनकर पर्दे पर उतरे, इसके बाद 1996 में हिंदी सिनेमा मे एक बार फिर छोटे

सरकार अवतरित हुए। इस बार छोटे सरकार गोविन्दा बने थे। हिंदी में बनी पहली थ्री-डी फिल्म 'छोटा चेतन' का नाम भले ही छोटा हो ,लेकिन उसका कारनामा बहुत बड़ा था।

छोटे के बाद छोटी को देंखे तो छोटी-छोटी बातों की याद आ जाती है। अपने जमाने के मशहूर नायक मोतीलाल ने अपने निर्देशन में 1965 मे 'छोटी छोटी बातें' का निर्माण किया था। 1976 में आई 'छोटी सी बात' कॉमेडी की बड़ी बातें करती सुनाई देती है। जिसमें अशोक कुमार और अमोल पालेकर ने दर्शकों को खूब गुदगुदाया था। 1967 में बंगाल के महानायक उत्तम कुमार वैजयंती माला के साथ हिंदी सिनेमा से छोटी सी मुलाकात करने आए। इसी तरह एक बच्ची और तीन डाकुओं पर आधारित बनी फिल्म 'नन्हा फरिश्ता' में प्राण, अजीत और अनवर हुसैन एक प्यारी सी बच्ची के सामने बौने नजर आए। लेकिन, इस फिल्म ने बड़ा बिजनेस कर सफलता हासिल की थी। फिल्मों के शीर्षक के अलावा गीतों में छोटे और छोटी जैसे शब्दों का उपयोग बहुतायत से किया गया है। सुनो छोटी सी गुडिया की लम्बी कहानी, छोटी सी मुलाकात प्यार बन गई, छोटी छोटी यादों की हैं बातें बड़ी, छोटी सी ये दुनिया पहचाने रास्ते हैं, छोटा सा बालमा अखियन नींद उडाय ले गयो, ओ नन्हे से फरिश्ते, नन्हा मुन्ना राही हूं, भैया मेरे छोटी बहन को ना भूलाना, ने बड़ी सफलता हासिल की है।

जब अंधेरा होता है... आधी रात के बाद !

प्रकाश पुरोहित

यह सवाल ही नासमझी का है कि तीन सौ ज्यादा होते हैं या दस हजार! जब थोड़ी मेहनत और आधा रतजगा यदि दस हजार दिलवा रहा है तो दिनभर कौन तीन सौ के लिए माथाफोड़ी करे, बगैर हेलमेट, बगैर लायसेंस, गलत साइड से आना-जाना, बगैर इंडिकेटर किधर भी मुड़ जाना या चलती गाड़ी पर मोबाइल या दुपहिया को लोडिंग रिक्शा बनाना या स्कूली रिक्शा में ठंसे बच्चे या अपनी लेन का कोई मतलब नहीं, जैसे अपराध के लिए तीन सौ से पांच सौ के बीच चालान बनते हैं। ना देने वाले को दिक्कत, ना लेने वाले को खुशी। दस प्यादे मारने का सुख, एक शाह को मारने से तो कम ही होता है ना। कम मेहनत में ज्यादा कमाई किसे बुरी लगती है, फिर आधी कमाई भले ही सरकारी खजाने में ही क्यों ना जा रही हो।

इसीलिए हमारे शहर में इन दिनों पुलिस दिन भर पर भी नहीं चलते, पैदल ही रड़बड़ते रहते हैं। पुलिस को भी सुभीता हो जाता है कि उनकी तरफ देखते भी नहीं। 'नंगा क्या तो पहनेगा, क्या निचोड़ेगा', तो पुलिस ही इनसे क्या निचोड़ लेगी।

इसीलिए आजकल बदलाव देख रहे हैं कि रात को लगाए बेरिकेड्स दिन भर पड़े गवाही देते हैं कि कल रात यहां पुलिस कर्मठता से हाजिर थी। रात में इतनी हलचल हो जाती है कि दिन शांत रहता है। ना तो मोबाइल पर बात करते को पकड़ते हैं और ना ही तीन सवारी को उतारते हैं, क्योंकि वैसे भी तीन सवारी अपराध नहीं है, यह तो 'अनैतिक कर्म' में शामिल है। शहर में फुटपॉथ पर पैदल के लिए जगह नहीं है तो इसका साफ मतलब है कि हमारी समर्पित पुलिस रात के शराबी को पकड़ने में लगी है।

ऐसा भी नहीं है कि पुलिस हर समय कड़क ही रहती हो, मौका और अवसर देख कर नरम भी हो जाती है। नमूने के लिए रात में बाहर गांव से आए व्यक्तियों को नहीं पता है कि इस शहर में क्या चल रहा है और अपने शहर जैसा ही समझ कर मयनोशी कर लेते हैं। अब पुलिस के सामने यह धर्म-संकट हो जाता है कि इनका क्या करें, क्योंकि दस हजार का

रात का इंतजार करती है, क्योंकि कामकाजी जनता रात में ही मदिरापान के जरिए दिन भर की मेहनत की वसूली करती है। अब यह तो हर रोज संभव नहीं है कि गालिब की तरह अपनी बोतल और अपना जाम लिया और बैठ गए। वैसे भी पुलिस के हक में यह आदर्श वाक्य मदद करता है कि 'अकेले मयनोशी से कुंठा पैदा होती है।' फिर कभी तुम पिलाओ और कभी हम, इससे बिजनेस को बढ़ाने के उजले अवसर तैयार हो जाते हैं। जो कभी छूते नहीं थे, धंधे का लिहाज रखने के लिए हर रोज पीने को तैयार हैं। या तो ये कहीं जाते हैं या फिर कोई इनके यहां आता है, तो सिवाय शराबखोरी के और ये बेचारे कर भी क्या सकते हैं।

जैसे कई लोग सामाजिक संस्थाओं के सदस्य सिर्फ इसलिए बन जाते हैं कि अफसर, उद्योगपति, नेता और डॉन से परिचय हो और मेल-मुलाकात से धंधे की रौनक बनी रहे। पुलिस के चालान के डर से कोई भरी दोपहर में तो पीने से रहा। फिर वैसे भी दिन में तो वही टुन्न रहते हैं, जो देसी पीते हैं और जिनके खीसे में दस रुपए भी नहीं होते हैं। अच्छी बात यह भी है कि ऐसे फोकटिये कार या फटफटी चालान बना तो गाड़ी भी थाने पर जमा करनी होगी और फिर कोर्ट से ही छूटेगी। बेचारे रात भर कहां रहेंगे... तो फिर यह रास्ता निकाला जाता है कि (असामी देख कर) कि कुछ कम-ज्यादा ले-देकर मामला यहीं रफा-दफा कर दें। इस चक्कर में कभी पुलिस की अपनी जेब में छह हजार तो कभी बारह हजार भी चले आते हैं। मानवता दिखाने की इतनी कीमत तो बनती है ना!

... तो यदि आप लोगों को यह लग रहा है कि दिन में पुलिस ने छूट दे रखी है तो इसके लिए आपको शराबियों का शुक्रगुजार होना चाहिए, बल्कि होते रहना चाहिए कि यह सिलसिला तब तक तो बंद होगा नहीं, जब तक कि शराब पी कर आधी रात को गाड़ी चलाने पर तीन सौ रुपए दंड तय ना हो। जब तक दस हजार की सीमा तय है, पुलिस पीछे नहीं हटेगी, फिर भले ही रात को रास्ते में रखे बेरिकेड्स से सुबह कोई टकरा कर मर ही क्यों जाए। रात भर की थकी-हारी अब रोज तो बेरिकेड्स इधर-उधर नहीं कर सकती ना!

इसलिए फिक्र ना करें और दिन में उसी तरह से चलते रहें, जैसी आपकी मर्जी हो और जैसे अब तक चलते आए हैं या जब तक मयनोशी की आदत नहीं लगती है!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

सच्ची समाज सेवा, शब्दों का मरहम

इस महीने 27 तारीख को विश्व एनजीओ दिवस पड़ रहा है। बहुधा हर परिवार में आजकल दो ही बच्चे होते हैं। बड़े होते ही वे अपना मकाम उच्च शिक्षा के ज़रिये देश-विदेश में हासिल कर लेते हैं। अब रह जाते हैं, माँ-बाप एक अच्छी जमा पूंजी, पेंशन, हेल्थ इंश्योरेंस के साथ एक आलीशान घर में। मैं भी उसी नाव में सवार हूँ, पर शुरू से कुछ थोड़ा थोड़ा जो जी में आता था समाज को देने के प्रयास में लगी रही, शायद इसीलिये ख़ालीपन का अहसास नहीं हुआ। मेरे परिचित दंपती अचानक प्रकट हुये सवाल था, जीवन के इस खालीपन को भरने के लिये वे क्या करें? उन्हें 'समाज सेवा' थोड़ा सम्मानीय काम लगा। वे शायद ये भूल गये कि सबसे पहले सम्मान और नाम को पाने का लालच छोड़ दूसरों की सेवा की जाये उसे ही समाज सेवा कहते हैं। क्या हम तथा कथित एनजीओ खोल लें? अख़बार में नाम भी आयेगा।

उम्र के इस पड़ाव पर अचानक ही सेवा-भावी हो जाना एक मशीनी भावना को जन्म देने जैसा है। लोग समाज सेवा को एक ही अर्थ में ले रहे हैं। प्रसिद्धि पाने की चाह या सरकार से अनुदान, कागज पर दौड़ती समाज सेवा या कोई एन.जी.ओ. खोलने की चाह। खैर जब जागें तब ही सवेरा। अपने जीवन के अनुभव से मैंने जो सीखा वो उन्हें ख़ास भाया नहीं क्योंकि उसमें आंकड़े, अनुदान राशि, प्रशंसा प्रसिद्धि कुछ नहीं था।

मुझे याद है पिता जी के दफ़्तर जाते ही ठंड की दोपहर में माँ, चाची, दादी वगैरह आंगन में स्वेटर बुनतीं, बड़ी डालतीं और सागर पेशे से कपड़े वाली, बर्तन वाली, घरेलू सहायता के लिये उपलब्ध सारी महिलायें बतियाती उनसे मदद मांगती दिखतीं। तब ना मैं 'समाज सेवा' शब्द के मायने जानती थी ना ही काम करने की प्रक्रिया। आज जाकर समझ आया वो बीज हम में कहाँ से आया ? दूसरों की मदद करने को हमने रोजमर्रा के कामों में जो शामिल कर लिया था। बैठे बैठे माँ आदेश देती, बेटा एक स्लेट चाक ये राधाबाई के बच्चे को पकड़ा दो, ज़रा देखें, तुम उसे अ, आ, इ, ई लिखना सिखा पाती हो या नहीं। मैं बड़े उत्साह से राधाबाई के बेटे को लिखना सिखाने में जुट जाती। धोबिन बच्चों की परेड से परेशान थी, माँ उसे दबे स्वर में फैमिली प्लानिंग समझाती, रोज पिटने वाली काम वाली के पति को दादी तलब करतीं और उसे बीबी को ना पीटने का सबक देतीं।

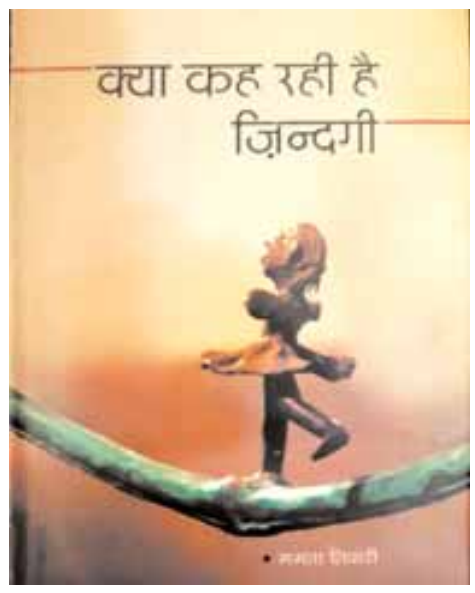

कुल मिलाकर घर बैठे ये महिलायें कितनों का भला करती। समाज सेवा सबसे पहले घर से ही शुरू होती है ये आज समझ आया। माँ का आदेश था चार-छह रोटियाँ डब्बे में हमेशा होनी चाहिये, ''रात-बिरात कोई आ जाये तो'' दरअसल वो घरेलू काम में सहायतार्थ लगी महिलाओं के लिये नाश्ता होता था। पर मुफ़्त कुछ नहीं। बच्चों से खेल खेल में सूखे पत्ते उठवाती, पानी देना पौधों में, क्यारियों की ईंटों में रंग करना। हमें भी साथ लगाया जाता ताकि हमारे मन में समानता का भाव बना रहे ना तो वहाँ कोई देने के भाव से गौरवान्वित होता ना ही लेने वाला कृतार्थ। ये था मेरा समाज सेवा सीखने का पहला अनुभव। फिर मैंने महसूस किया हर क्षेत्र में इसके लिये जगह है आजकल कपड़े, पैसे, तेरहवीं, शादी के बचे भोजन को निपटाकर समाज सेवा की इतिश्री हो जाती है।

हमारे पूर्व नेतागण, अपनी लेखनी से देश की आज़ादी के लिये लोगों को उत्साहित करते, समाचार पत्र निकालते, चंदा इकट्ठा करते, निःशुल्क राजनीति में हिस्सा लेते, जिससे लोगों की मदद करते थे। कुछ प्रसिद्ध पुराने व्यवसायी आज भी संकट के समय अपने कर्मचारियों के घर जाकर कुशल-क्षेम पूछते हैं और यथा संभव उनकी मदद करते हैं। तब राजनीति पेशा नहीं था देश समाज सेवा का एक बहुत बड़ा ज़रिया था। ऐसा नहीं है कि आज ऐसा नहीं हो रहा है, पर पैसा और पद लोभ सच्चे समाज सेवियों को दूर धकेल देता है। अर्थात् समाज सेवा हर तबके हर क्षेत्र में सरल भाव से की जा सकती है। सारी दुनिया के काम करके, संस्थाओं में जाकर मदद करने के कटु व असत्य अनुभव से मैंने सीखा कि आप जिस क्षेत्र में रूचि रखते हैं, उसी से समाज को कुछ दे सकते हैं। मेरे लिये था ''शब्दों का मरहम'' का प्रेरित वाक्य। किसी दुखियारे या पीड़ित को सर्वप्रथम चाहिये शब्दों से सांत्वना, आधा दुःख उनकी बातें सुनकर भी कम किया जा सकता है। अपने जीवन और उनकी कहानियों और उनसे निकलने के अनुभवों को मैंने काग़ज़ों पर शेअर करना शुरू किया। कितने लोगों के मैसेज आते ''हमारे मन की बात लिख दी आपने या अब मैं भी अपनी समस्या स्वयं सुलझाऊँगी, हम सब में एक कवि, लेखक छुपा है, हर कोई अपनी भावनायें काग़ज़ पर उकेर कर अपना दिल हल्का कर सकता है। ''कुछ होने के'' भाव से गौरवान्वित भी हो सकता है मन अच्छा रखने का ये सबसे सरल उपाय है ''लिखो'' टूटा फूटा सही जैसा भी बने लिखो। सास-बहू, पति-पत्नी की अनबन जैसी छोटी बातों से निकलना हो तो लिखना होगा, क्योंकि समाज सेवा घर तोड़ने की सलाह नहीं देती कभी। तो जोड़ने के प्रयास में ये पहली समाज सेवा है। लोग जो मन में रखे हैं कह नहीं पा रहे हैं वो कलम का सहारा लें लिखें सर्वप्रथम मीठे चुनिंदा शब्दों से पीड़ित व्यक्ति की व्यथा सुनें और शब्दों का मरहम लगायें। अक्षरों की ताकत समाज सेवा का पहला कदम है, दिल से सुलझायें उनकी भावनाओं को, जो पीड़ित हैं। इसके लिये किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं है। ये मेरा व्यक्तिगत अनुभव है जो सिर्फ शब्दों से हल हुआ है। तो, पूछें किसी दुःखी व्यक्ति से मुस्कुराके सुबह सवेरे और क्या कह रही है ज़िंदगी?

पर्यावरण

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र लेखक हैं।

सीपें - जलीय-दुनिया की गुपचुप नायिकाएं

नदी की तलहटी में आधी गड़ी हुई, या समुद्र के किनारे चट्टानों से चिपकी हुई सीपों में न तो कोई चमक-दमक है, न कोई तेज़ गति। फिर भी पूरी जलीय-दुनिया बहुत हद तक इन्हीं पर टिकी हुई है। सीपों को अगर एक पंक्ति में समझना हो तो कहा जा सकता है कि वे पानी की सफाईकर्मी हैं। बिना थके, बिना रुके सीप अपने शरीर में पानी खींचती है, उसमें से गंदगी, सूक्ष्म कण, बैक्टीरिया, शैवाल, रसायन और भारी धातु तक को छानती है और अपेक्षाकृत साफ पानी बाहर छोड़ देती है। वैज्ञानिक बताते हैं कि एक सामान्य आकार की सीप एक दिन में 20 से 40 लीटर तक पानी छान सकती है। अब ज़रा कल्पना कीजिए, अगर किसी नदी या तट पर हज़ारों या लाखों सीपें हों, तो वे कितनी बड़ी मात्रा में पानी को साफ रखती होंगी।

दुनिया भर में सीपों की लगभग 1200 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से करीब 1000 प्रजातियां मीठे पानी में और बाकी समुद्री जल में रहती हैं। दिलचस्प बात यह है कि मीठे पानी की सीपों की सबसे अधिक विविधता उत्तरी अमेरिका में पाई जाती है। वहां अकेले लगभग 300 प्रजातियां हैं। युरोप में करीब 16 प्रमुख प्रजातियां हैं, जबकि एशिया में भी बड़ी संख्या में मीठे पानी की और समुद्री सीपें मिलती हैं। चीन, भारत, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया के देश सीपों की जैव विविधता और खेती, दोनों के लिए जाने जाते हैं। सीपों की बनावट बेहद सरल लेकिन प्रभावशाली होती है। दो मज़बूत खोलों के भीतर उनका कोमल शरीर सुरक्षित रहता है। ये खोल कैल्शियम कार्बोनेट से बने होते हैं, जिसे सीपें पानी से धीरे-धीरे लेकर परत-दर-परत जमा करती हैं। यही कारण है कि उनका खोल जीवन भर बढ़ता रहता है। मोती बनने की प्रक्रिया भी इसी से जुड़ी है। जब कोई बाहरी कण उनके शरीर के भीतर फंस जाता है, तो सीप उसे ढंकने के लिए कैल्शियम की परतें चढ़ाती जाती है और धीरे-धीरे मोती बन जाता है। सीपों का जीवन चक्र और भी रोचक है। समुद्री सीपें अपने अंडे और शुक्राणु पानी में छोड़ती हैं। उनसे सूक्ष्म लार्वा बनते हैं, जो कुछ समय तक समुद्र में तैरते रहते हैं और फिर किसी सख्त सतह से चिपक जाते हैं। मीठे पानी की कई सीपें तो और भी अनोखा तरीका अपनाती हैं। उनके लार्वा कुछ समय तक मछलियों के गलफड़ों या पंखों से चिपककर रहते हैं। इससे उन्हें सुरक्षित वातावरण मिलता है और वे दूर-दूर तक फैल पाती हैं। बाद में वे नदी की तलहटी में गिरकर स्वतंत्र जीवन शुरू करती हैं। यानी सीपें केवल पानी पर नहीं, मछलियों पर भी निर्भर करती हैं। मछलियां कम हों, तो सीपों का भविष्य भी संकट में पड़ जाता है। सीपों की सबसे बड़ी खासियत उनकी उम्र है। समुद्री सीपें आमतौर पर 10 से 20 साल तक जीवित रहती हैं, जबकि मीठे पानी की कई सीपें 50 से 100 साल तक जी सकती हैं।

हाल के दशकों में यह देखा गया है कि मीठे पानी की सीपों की लगभग एक हज़ार प्रजातियों में से अधिकांश या तो संकटग्रस्त हैं या तेज़ी से घट रही हैं। पोलैंड, क्रोएशिया और ब्रिटेन जैसे देशों में बड़े पैमाने पर सीपों की मृत्यु की घटनाएं दर्ज की गई हैं। लंदन की टेम्स नदी में पिछले 60 वर्षों में मीठे पानी की लगभग सारी सीपें मर चुकी हैं। उत्तरी अमेरिका में मीठे पानी की 70 प्रतिशत से अधिक सीप प्रजातियां संकटग्रस्त या विलुप्ति की कगार पर हैं। युरोप में 16 में से 12 प्रजातियां खतरे में हैं और 3 को अत्यंत संकटग्रस्त माना गया है।

इसके पीछे कई कारण हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण है जलवायु परिवर्तन। पानी का तापमान बढ़ रहा है, ग्रीष्म लहरें आ रही हैं। जब नदी या समुद्र का पानी अचानक बहुत गर्म हो जाता है, तो सीपें उसे सहन नहीं कर पातीं और बड़े पैमाने पर मर जाती हैं। इसके साथ ही प्रदूषण, रासायनिक अपशिष्ट, माइक्रोप्लास्टिक, नदियों का बहाव बदलना, बांध, खनन और शहरी गंदा पानी इस संकट को और विकट बना रहे हैं। महासागरों में एक और बड़ी समस्या है समुद्र का अम्लीकरण। कार्बन डाईऑक्साइड समुद्र में घुलकर पानी को अम्लीय बना रही है। इससे सीपों के खोल बनने की प्रक्रिया कमज़ोर हो जाती है। उनका खोल पतला और भुरभरा हो जाता है। छोटी-छोटी शिशु सीपें तो खोल बना ही नहीं पातीं ! समुद्री सीपें तटीय इलाकों के लिए जीवन-रेखा जैसी हैं। वे पानी साफ रखती हैं, तटों को कटाव से बचाती हैं, छोटी मछलियों और केकड़ों को आश्रय देती हैं और मत्स्य उत्पादन को स्थिर बनाए रखती हैं। जहां-जहां सीपों की चट्टानें होती हैं, वहां जैव विविधता कई गुना बढ़ जाती है। एशियाई देशों में भी सीपों की स्थिति चिंताजनक है। अंडमान-निकोबार और लक्षद्वीप जैसे क्षेत्रों की समुद्री जैव विविधता पर सीपों की गिरावट का सीधा असर पड़ रहा है। इन द्वीपों के आसपास के प्रवाल भित्ति (कोरल रीफ) तंत्र में सीपों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे पानी की स्वच्छता बनाए रखने में मदद करती हैं, जिससे कोरल और मछलियों का जीवन संभव होता है। लेकिन समुद्र का बढ़ता तापमान, पर्यटन से उत्पन्न प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा और तटीय विकास की गतिविधियां इन नाज़ुक तंत्रों को कमज़ोर कर रही हैं। एशिया में सीपों की खेती किसी आधुनिक उद्योग से कम नहीं है, बल्कि यह समुद्र और इंसान के बीच बने एक पुराने रिश्ते का विस्तार है। चीन, जापान, थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों में सीपों को 'उगाया' नहीं जाता, बल्कि उन्हें सही माहौल दिया जाता है, जहां वे अपने प्राकृतिक तरीके से पनप सकें। समुद्र के तट के पास बांस, लकड़ी या रस्सियों की कतारें लगाई जाती हैं। इन्हीं पर सीपों के लार्वा आकर चिपक जाते हैं। कुछ जगहों पर पुराने खोल, पत्थर या खास तरह की टाइलें भी डाली जाती हैं, ताकि छोटे-छोटे सीपों को पकड़ बनाने के लिए ठोस सतह मिल सके। फिर समुद्र अपना काम करता है। पानी के साथ आने वाला पोषण, शैवाल और खनिज तत्व सीपों के भोजन बनते हैं। इंसान को उन्हें खिलाना नहीं पड़ता, बस पानी को साफ और संतुलित बनाए रखना होता है। चीन इस क्षेत्र में सबसे आगे है। दुनिया में पैदा होने वाली समुद्री सीपों का बड़ा हिस्सा अकेले चीन से आता है। वहां के तटीय प्रांतों में हज़ारों किलोमीटर तक समुद्र में सीपों की खेती फैली हुई है। सैकड़ों सालों से मछुआरा परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस काम से जुड़े हैं। सुबह-सुबह छोटी नावों में निकलकर वे सीपों की कतारों की देखभाल करते हैं, टूटे हुए ढांचे ठीक करते हैं, ज़रूरत से ज़्यादा जमी सीपों को अलग करते हैं और परिपक्व सीपों को बाज़ार तक पहुंचाते हैं। यह खेती लाखों लोगों को रोज़गार देती है; नाविकों को, सफाई और पैकिंग करने वालों को, बाज़ार तक पहुंचाने वालों को और फिर होटल, रेस्तरां और निर्यात से जुड़े लोगों को भी।

जापान में सीपों की खेती तकनीकी रूप से काफी उन्नत है। वहां समुद्र की गहराई, पानी की गति और तापमान को ध्यान में रखकर खेती की जाती है। जापानी वैज्ञानिक सीपों की उन किस्मों पर काम कर रहे हैं जो ज़्यादा गर्म पानी में भी जीवित रह सकें। इससे जलवायु परिवर्तन के असर को कुछ हद तक संतुलित करने की कोशिश की जा रही है। जापान में सीपें केवल भोजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा हैं। सूप, सुशी और कई पारंपरिक व्यंजनों में सीपों का इस्तेमाल होता है। थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों में सीपों की खेती छोटे-छोटे तटीय गांवों की रीढ़ है। वहां परिवार के परिवार इस काम से जुड़े हैं। महिलाएं और बुज़ुर्ग अक्सर सीपों को साफ करने, छांटने और बाज़ार के लिए तैयार करने का काम करते हैं। बच्चों की पढ़ाई से लेकर घर के खर्च तक, बहुत कुछ इसी पर निर्भर करता है। इन देशों में सीपों की खेती गरीब समुदायों के लिए एक स्थिर आमदनी का साधन बन चुकी है। सीपों का उपयोग केवल भोजन तक सीमित नहीं है। उनके खोलों का इस्तेमाल चूना बनाने में, खाद में कैल्शियम बढ़ाने में और निर्माण सामग्री में भी होता है। कुछ जगहों पर सीपों के खोलों से सड़क और तटीय बांध मजबूत किए जाते हैं। पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में भी सीपों के खोल का पावडर उपयोग में लाया जाता रहा है। खाने के रूप में सीपें प्रोटीन, ज़िंक, आयरन और ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर होती हैं। यही कारण है कि एशियाई देशों में इन्हें 'समुद्र का पौष्टिक उपहार' कहा जाता है। गरीब परिवारों के लिए यह सस्ता और पौष्टिक भोजन है, जबकि बड़े शहरों में यही सीपें महंगे रेस्तरां में विशेष व्यंजन के रूप में परोसी जाती हैं। लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों जैसे इंडोनेशिया, फिलीपींस और वियतनाम में भी सीपों की खेती और प्राकृतिक आबादी पर संकट गहराता जा रहा है। वहां सीपें न केवल पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं, बल्कि लाखों लोगों की आजीविका से भी जुड़ी हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्री तूफ़ानों की तीव्रता, समुद्र स्तर में वृद्धि और जल-तापमान में बदलाव इन क्षेत्रों में सीपों के अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती बन गए हैं। खेती भी जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण से खतरे में पड़ रही है। अगर सीपें सचमुच कम हो गईं, तो क्या होगा? सबसे पहले तो पानी की गुणवत्ता गिरेगी। नदियां और समुद्र अधिक गंदले होंगे। पीने योग्य पानी तैयार करना और महंगा हो जाएगा। फिर शैवाल विस्फोट बढ़ेंगे, जिससे मछलियां मरेंगी और दुर्गंध फैलेगी। और धीरे-धीरे पूरा पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित होने लगेगा। मत्स्य उद्योग को भी झटका लगेगा। तटीय समुदायों की आजीविका भी खतरे में पड़ेगी। फिर भी आशा पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। वॉशिंगटन डीसी से होकर बहने वाली एनाकोस्टिया नदी को साफ किया जा रहा है सिर्फ सीपों के लिए नहीं, बल्कि सीपों की मदद से। पुनर्प्रवेश कार्यक्रम का उद्देश्य सीवेज, ई.कोली और माइक्रोप्लास्टिक्स सहित अन्य प्रदूषकों को कम करना है।

एनाकोस्टिया नदी की तरह कई लोग एक अलग रणनीति अपना रहे हैं। वे सीपों के संरक्षण के लिए धन जुटाने की बजाय, यह विचार सामने रख रहे हैं कि सीपों का उपयोग पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के लिए किया जा सकता है। पोलैंड की नीदा नदी में 1980 के दशक में सीपें पूरी तरह समाप्त हो गई थीं, लेकिन जब सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स ने प्रदूषण को काफी हद तक कम कर दिया, तब मोटे खोल वाली नदी-सीप को सफलतापूर्वक फिर से बसाया गया। इन उदाहरणों से यह साफ होता है कि अगर हम पानी को साफ करें, तो सीपें लौट सकती हैं। सीपों में एक और अद्भुत क्षमता है अनुकूलन की। हर सामूहिक मृत्यु के बाद कुछ सीपें बच जाती हैं। वही आगे चलकर नई पीढ़ी बनाती हैं। यही विकास की प्रक्रिया है। यही उम्मीद है। अगर हमने इन खामोश सफाईकर्मियों को बचा लिया, तो हम न केवल एक जीव-समूह को, बल्कि अपनी नदियों, अपने समुद्रों और अपने भविष्य को बचा लेंगे।

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

नाटक से सीख लेती फिल्म !

अलग-अलग तरह से 'हेमलेट' सिर्फ नाटकों में ही दिखाई देता है, लेकिन स्टार रिज अहमद और डायरेक्टर अनिल कारिया ने असल में दुःख और डिप्रेशन पर ऐसी फिल्म बनाई है, जो शेक्सपियर के शब्दों और कहानी का इस्तेमाल सिनेमाई तरीके से करती है।

लंदन है, जहां शक भरे फैमिली बिजनेस, परिवार की अनबन, शादी की रस्में, साजिश करने वाले साथी और रात में सड़कों पर तेज़ रफ्तार कारें हैं। 'हेमलेट' यहां टीवी के कैंडल रॉय जितना नहीं दिखता। राजकुमार के रोल में रिज अहमद है, जो मरे पिता (अविजित दत्त) के भूतिया नजारे से डर जाता है। डरावने सीन में उसे सुनसान शहर की छत पर बुलाता है और बताता है कि उसके भाई क्लॉडियस (आर्ट मलिक) ने उसकी हत्या कर दी है। क्लॉडियस गुस्सैल प्रॉपर्टी सट्टेबाज है, जिसने फोर्टिनब्रास की लीडरशिप में लोगों के टेंट वाले ग्रुप को प्राइम रियल एस्टेट से निकाल दिया है और अब वह हेमलेट की मां गर्टरूड (शीबा चड्ढा) से शादी करना चाहता है।

हेमलेट को रिज अहमद के किरदार ने आगे बढ़ाया है नाजुक आदमी का किरदार, जो खतरनाक तरीके से बिखर रहा है। अहमद की असली ताकत इमोशनल सच्चाई है, जो उन्होंने ड्रामा के सबसे मुश्किल और जाने-पहचाने रोल को दी है। लंदन में ब्रिटिश साउथ-एशियन कम्युनिटी के बीच सेट एक्शन के साथ यह हेमलेट कहानी की जरूरी बातों पर टिका रहता है ताकि छोटी, बेरहम कहानी को फिर से बताया जा सके। साउथ एशियन जिंदगी को बड़ी चतुराई से लंदन के बैकड्रॉप में पिरोया है। याद आता है कि शेक्सपियर कितने यूनिवर्सल हैं।

अहमद और निर्देशक अनिल करिया ने वह हासिल किया है, जब उन्होंने 2022 में शॉर्ट फिल्म 'द लांग गुडबाय' के लिए ऑस्कर जीता। रिज अहमद उर्फ हेमलेट के बिना एक भी दृश्य नहीं होता है। वह तना, भरा है।

फिल्म में करिया की नजर उस अलगाव की ओर लौटती रहती है, जो तकनीक लेकर आई है। यह बुद्धिमान फिल्म है और ऐसा ब्यौरा, जो पहली बार में यह सवाल पूछने की इजाजत देता हो क्या होगा यदि क्लॉडियस हत्या के आरोप से निर्दोष है, इस हेमलेट में कठोर ठंडक है।

रात में काबू से बाहर हो गई कार में यह सीन, फिल्म की तरह, आज के पल में लगभग फिट बैठता है, जैसे हम अंधेरे में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, मुसीबतों के समंदर से घिरे हुए। यह असल में हेमलेट नहीं है, कुछ नया है, जो हेमलेट के शब्दों का इस्तेमाल करता है, अपने सबसे अच्छे रूप में शेक्सपियर के मास्टरपीस को पूरी ताकत से पेश करती है।